हस्त लिखित

श्री उत्सव भावना

तथा सामग्री की

भावना

संकेतासिधकरनार्थश्रीजीकेइहांपात्रचोकमेंमां
उतहें लीलागोप्यकरनार्थपात्रसुधउजरे



स कूं श्रवनमेंबहुतमधुरलागी अंगअंगसीतल
होइगयो श्रीगाकुरजीकोंआपनीगोदमेंबेगारिह
स्य

भाभू श्रीकृष्णप्रियाबहूजीकोपुस्तक
यामै कड़ीभउ चवारै तोतजीकेपोलहैं

आंरवमी चांमणीमागरबो।। ।।के दाब
नमारे केसईयरसनैमलीचालो।। सुरव
मामालोरे नवनादुरवडांटालो।।१।।आ न्नण
पर ...रे केमननागमतांजंगे।। बनमा
...रे जीररवयासुंदरवरने।।२।।वद
...हालीरे बलतीजाग्पारमे।। श्रीह
रीबोल्यारे केसकुंतमरा बनमा।।राधा
जीबोल्यारे लीलारमो सबनमा।।...ली
हरीमाडोरे केरमबासरुवीलास।।जो जी
सनैमंडलरे रा चत्र जीनेपास।।४।।
...श्री ...णजाये।। मोहनमो
ठडा... ...मुरलीवाये।।५।।राधाजी
रंगजरे जीमजीमपाडेताली।। तीमती
मनाचे रे नटवर श्रीवनमाली।।६।।
वीचेवा लीलारे मोहनसाथे करता
।।मुरवडु जोतारे मोहननोमननगमना।।

[illegible]लता[illegible]बोलीरे ईप जंबु मारा मन मा॥ आंखमी चा
२ मणीरे मीस नेवर वन मा॥ ८॥ श्री हरी ने
मरे [illegible] लता आंखो मी ची॥ राधाजी चा सि
रवर करवने नी चो॥ ९॥ चतुराज श्री ने रे
चंपक वन मा पेठा॥ हरी ने ठग वा रे फ
लुत्रे हुलु त्रे पेठा॥ १०॥ नां सा नो लीरे वेद्र ने
नंद्र लगा॥ जैने कुपीया रे झाड कदं मे नवा
या॥ ११॥ पीली पटो लीरे चंपक वरणी चो
ली॥ नेवट कीधा रे अंग केसर घोली॥ १२॥
नकल ता नो रे बेलो बी डो अंगे॥ को ई नंद
खरे मलीया अंक जरे गे॥ आंखवा डी रे
चतुर सु जाणे राये॥ डगले ड [illegible] रे वा ले
दीस जोता जाये॥ १३॥ सामी जल [illegible] रे [illegible]
तो वरसु लुत्रे॥ श्री हरी सो च्चे रे कर [illegible]
ख पर ने जोता॥ १४॥ कां ई न जडी या रे
फरी आव्या ते णी ठामे॥ नीचु नीहा ली रे

मन मा संरव्या पामा॥ १५॥ द्वा [illegible] ली [illegible] लल ता खी
लीरे राधाजी आंधा आवो॥ श्री हरी बोल्या रे
मुज मन सो च्चीला वो॥ १६॥ ललता पासे रे
राधाजी आंखमी चा वो॥ १७॥ राधाजी बेठा रे
[illegible] ता आंखो मी चा॥ १८॥ श्री हरी चाल्या
रे श्याम तमाल ते वन मा॥ कोई ते कर
[illegible] रे ला णा मनो रथ मन मा॥ १९॥ कु
मन [illegible] लीरे नो मन कहीये को ली॥ नी
[illegible] मनी रे जोडा जोडे जोली॥ २०॥ अंग
रंचंदणा नारे कस्तुरी ना का दव॥ तां जा
ई की पीयौ रे जुगत करी जेजा दवा॥ २१॥
आंखवई घाडी रे राधाजी लाग्पा जोवा॥
राधाजी बोल्या रे कुल्ले कलडन ब जा ने॥
ललता बोली रे हुस हु श्री आगल थां जे॥
२२॥ सा श्री यर सग ली रे मल [illegible] कुंत्रे बकज

कंबोटोले ॥ तेमा सुंदर रे राधावर सज
ज्योले ॥२५॥ नेपुर नेचांर ले जोतेन … वोले
॥वं… ईन जडी … करी आव्या … ठामे
॥२६॥ नी चुनडी ओढी रे मन मा संरव्या पां
मा ॥ ललता बोली रे श्री हरी … सु कही
ये ॥२७॥ राधाजी बोल्या रे … छे
छे ने ॥ श्री तारे राधा जी रे हरी सामु जो
ई ने हसीया ॥२८॥ श्री हरी बेठां … सा
मा आदर आ … नो रा कर तारे …
सरसा चांपे ॥२९॥ व्रजजाजी त्यां …
मे आही … डा हार्यां ॥ ओक ने … रेस
ने नाका रज सारा ॥३०॥ आरव मी धाम
णी रे जे कोई हरी नी … से नर ने …री
रे सर्व को पावन थासे ॥३१॥

चाजजीखवने॥:॥वालोव्रजपतीव्रजाधीश
रकरजोडीनेनामुखीसरे॥मोटामुनीव
रनकरेरासपधा।स्याश्रीव्रजाधीशजी
माहाराजरे॥२॥घनवीठलेशजीछेतात
रेघनरुकमणीवहुजीमातरे॥जेना
व्रजपतजीछेभ्रातपधास्याश॥वालोसु
दरगुर्नरसरीररे॥छुणमारवानेगंभी
ररे॥श्रेवाव्रचंद्रावलीवेटीजीनावीरप
धास्या॥३॥मुखसमरदाहुलानोचंदरे॥जे
नेमंदरखावालमुकुंदरे॥श्रेवाव्रजकुअर
वहुजीमाकंथपधीस्या॥४॥वालोखबाली
यामापधास्यारे॥वालेवैसवनेजेधास्या
रे॥जन्नमाष्टमीनासुखदेखवाका पधास्या
॥५॥वाजेवाजंत्रमृदंगतालरे॥सुखसो
नातणोनहीपाररे॥मोटीछोलनतवाजेछे

द्वार पधारया ॥६॥ त्या तो नंदम स्रोछव थ्याय रे
॥ वैस्नव दरशणे जाय रे ॥ हवेली मा नो
ड्डनराय पधारया ॥७॥ थई छे दधा का
दवनी कीच रे ॥ मुखे बोले छे मंगलगा
तरे ॥ वालो आपर मे मा हेडीच पधा
रया ॥८॥ कंठे मुगता फलनी माला रे ॥
बाजुबंद पोहोंची रसाल रे ॥ जो वा व्रजजा
धीशदा नंदयाल ॥ पधारया ॥९॥ पेरया
पीतांबर पर नासार रे ॥ रंग्या केशरी रंगे
अपार रे ॥ वाला नो नीगमन पामे पार ॥ प
धारया ॥१०॥ वाला ना खीट लीयाला केस रे ॥ पा
वन का वास गला बदे स रे ॥ श्रेने न मे बेन रे
स पधारया ॥११॥ पावन की पोरखं वाली सोहे
र रे ॥ दईजी वर्न पर घणी मेर रे ॥ वा ती
तनी कर बावा पेर ॥ पधारया ॥ वाले स
ईपानी कुरणा की पा रे ॥ व्रज प्रीया बेटी
साथे ली ध्या रे ॥ वाले वां एने पावन की पा

पधारया ॥१३॥ वा लो श्री नंद मगन बीरा जे रे ॥
वालो जुगल सरुपे राजे रे ॥ माथे वाल
कृस जी वी राजे ॥ पधारया ॥१४॥ वाला नी
लीला तणो नही पार रे ॥ वेद वंचे ने कर
वीचार रे ॥ शेने ब्रम्हा न पामे पार ॥ प
धारया ॥१५॥ व्रजाधीशजी पर मे कृपा
करे ॥ मुखडे का मकरी करु वरबाण रे ॥ व्रज
केसर वल्लु जी छे चतुर सुजाण पधारया
॥१६॥ व्रजाधीसजी जोया जे वारे ॥ वालो स
ने बक्षा सुखदेवा रे ॥ प्रेमे करे स्या सजी
नी सेवा ॥ पधारया ॥१७॥ जे कोई व्रजाधीश
जीने गाये रे ॥ ते ने जनम जनम सुख थाये
रे ॥ तेना पाप मीथ्या वा थाय ॥ पधारया ॥
१८ ॥ वाले सर्व नी ते पुरी आस रे ॥ वसी
या जो च पुर मा वास रे ॥ मने राख जो ब
चर णनी पास रे ॥ कर जोडी ने के वैस्नव दा
स पधारया ॥१९॥ श्री ॥ : ॥

जो
अथ ककावलीष ते ॥१॥ ककाकीर पाकरौ श्री
वलभ ॥ तो तेने कांई नही दुलभ ॥ करुण
द्रष्ट करीने जुये ॥ तो ते ना दुख दालीदर खु
ये ॥ तो तेने थाये सरव थाये सुलभ ॥ कका
॥१॥ खखा खारी द्रष्ट जो करो ॥ पुष्टी भक्ती मा
रग व रो ॥ ब्रह्म संबंध ते कर जोरी ते ॥ से
वा सखार एण कर जो प्रीते ॥ प्रभु पद क
मल रका भाव रो ॥ खखा ॥२॥ गगा गुण
श्री वलभ ना गाये ॥ श्री वलभ श्री वीठ
लनो ॥ ते ना चरण कमल नीत भजो ॥ अन
देव ई पासन न तजो ॥ प्रभु भक्ता नो करो ई
पाये ॥ गगा ॥३॥ घघा घड घड पा नश पा मसम्रा
रो ॥ तो की क भा द्रष्टी चित नी वारो ॥ वीस आ
श्रय क नी दुर जर हे ॥ तो घट स्ना घन स्या
म जल छे ॥ ते प्रभु भजन मा करी नीर धारो ॥ घ
घा ॥४॥ ननाने अनंद सागर सुथाये ॥ ते मा

टेंक्र कर वो नं पाय चीं तन न एगी व चल ना तजो
॥ पुर एा पुरुशो तम ने भजो ॥ प्रेम प्रकारी मैं
नीसदीन भजो गाय ॥ नना ॥ ५ ॥ व्रच चानी
तच लुराई श्री एगो श्री गोवर धन नाथवरवा
एगो ॥ के नीलीला मान ज मे ॥ ते तो के ने श्र नी सेव
मे ॥ प्रेके श्र भ्र तसा धुनी रवाए ॥ व चा ॥ ६ ॥ कु
छा कुव कु वी ला मी जोय ॥ प्रेसमा नन दी
वी [redacted] जो कोय ॥ नयएो नीर खी श्र ती
सुख ली जे ॥ प्रेम सुधार सानी स दीन पीजे
तो सुख सर वेसे जे होय ॥ कु छा ॥ ७ ॥ जनी जु
गमा हे जस वा चे ॥ जो श्र वा प्र भु में मन राचे
जो मुख थी श्री कृ स्न स कहे ॥ कृ जन्मं सी धन
ना सुख लहे ॥ मन क्रम व चन करी ने सा
जजा ॥ ८ ॥ क्रमा क्रा कु सुवरी कही ये ॥ सुख
दुख दु ख व न जस ही य ॥ कांम क्रोध लोभ
री द ने टाली ॥ चरए कमल ची त नी जे वारी

तो सुख व स वे से जन म ल ही ये ॥ कु क्रा ॥ ९ ॥ नना
ने ए श्री नाथ जी ने नीर खो ॥ श्रे कु बा तो नो
श्रा स र खो ॥ टा ले म प त स दा नी श्रे हु ॥ श्रे सु
की ते सा चु प्र ने ह ॥ स ने हु क री हु या म हर
लो ॥ नना ॥ १० ॥ ट टा ट ग म ग ट गा मु ग ओ
सो ॥ श्र जु न ज्यावी ना जन म जखो सो ॥ अं त
मन कृ जन सा घ री ॥ श्रा श्र व सार नही श्रा वे
क री न ही वे तो तो श्रा ग ल रो सो ॥ ट टा ॥ ११ ॥
ठ ठा ठगा ता कांरे ठगा श्रो ॥ हु वे काई मनमा कनेम
रवा श्रो ॥ क प ट को पत नी धा पर हु री ॥ पोता
नो कां ई सा धन क रो ॥ ना र म ल ची ते ह री गु
न गा श्रो ॥ ठ ठा ॥ १२ ॥ ड डा डा प एा श्रे बी क रे ॥
श्री व ल भ श्री ठ ल ची त ध रो ॥ नलु ची ने जे पो
ता त रगु ॥ प्र भु थी चीं त र खे दा लो रवी ए ॥ तो
से ते भव सा गा र त रो ॥ ड डा ॥ १३ ॥ ढ ढा ढी ठ

कीठा दूंगी कीजे ॥ सेवा कीर तन कंथा मनदीजे
॥ नव सागर नें तर वो खोठो ॥ श्रेन रखानो मा
रग मोटो ॥ रसना गुणगाई रस पीजे ॥
ढढा ॥ १४ ॥ णणा णे ण सुफल जकरी ॥ मा
धुरी मुरत मन माचरी ॥ नख सख नीर
रुप खु श्रेनों ॥ सुंदर श्री वृंदावन जुप ॥ रखवी
सारो श्रेवा कहरी ॥ ण णा ॥ १५ ॥ तता त न नोत
पजट लो ॥ जो गीर गोवर्धन चर मलो ॥ जो
धोनों नो जनम सच्चारे ॥ तो श्रेसा धोश्री वच्चा
रे ॥ धोतै श्रीव ने मले ॥ तता ॥ १६ ॥ थोसे
थोता पणुस जारे ॥ न ना ॥ १६ ॥ थथा थल गहा था
क नीकारो ॥ मसा जनम रह मर वा तो आरो ॥ भ
वसागर जेला र से पार ॥ ना मरु नाव
ज सा बरा ॥ गुरु श्री वलनवी ठ लग्या
रो ॥ १७ ॥ थथा ॥ दद्दा द यो करी देसे दोंज ॥ श्रे

ग्रामत
जे पर से कान ॥ वंस वंसा दी करसे नें
चार ॥ नव सागर ते तार से पार ॥ वद वीज
न ने श्रती से मान ॥ ददा ॥ १८ ॥ च धा चं नदी व
स के मात ॥ मंदर पा श्री चासा माराज ॥ नीर
खी नीर खी ने श्रती सुख थाय ॥ श्रे मुख थी
कालंग के वास ॥ श्रे ची त द रे सरे सर व
को जा चपा ॥ १९ ॥ न ना जी सदी न नाम ज ज
वे ॥ श्रे बु फल न ह्री कोटी जनमत पे ॥ तप
करी ने कां कष्टो काय ॥ कृष्ण नाम जपे सर
वे फल थाय ॥ श्रे आगल आवे बहु खपे
ग न ना ॥ २० ॥ पपा पी नम पंप आचार ॥ जु
गमा जीवन नंद कुमार ॥ मात जसोदा
जी जो जीवन ॥ चोरी लीधुं बज जन नु मंन
॥ ब्रज मा नी सदी न करे वी हार ॥ पपा ॥
॥ २१ ॥ फफा फ ग तु मम मे जीस चीत न ॥ रखे

वीसारे मन मोहन मीत ॥ श्रीवल्लभ सारी ने सु
खनवल्लहे ॥ ते तो वेद पुराण कहे ॥ वरी
वरी का कु सकदु नीत ॥ कका ॥ २२ ॥ बबा
बहु बल नहु न ही काम ॥ सरल पण वस
श्या से साम ॥ श्रीवल्लभ वर नो मारग महा
॥ मन वंछीत फल [illegible] र ते र ही ॥ एवर ए
क मन मा करी ने संम ॥ बबा ॥ २३ ॥ भभा
भगवदी संग भजनी ॥ श्रीवीठल गुण गा
ओ मनजी ॥ श्रीवल्लभ चींत जनी सम्पन करो श्री
जीवा तसर वे पर हरो ॥ जो वहु मोहे जु ग
ए कुँकेली ॥ भभा ॥ २४ ॥ ममा मन वी श्री की
कु मो [illegible] ॥ जगती वीना बी जु सा [illegible] वी [illegible]
श्रीवल्लभवर सुगम जकरी ॥ पोती
नाजनने चीत धरी ॥ ते माटे वर ए
कमीन मा [illegible] ॥ ममा ॥ २५ ॥ यया [illegible]

रंग जी मदं ते ॥ ती मर [illegible] सार खवार [illegible] चा कं श्र
॥ ते मरं ग [illegible] पर म जी ठचो लो ॥ ते मरंग
माल्हे करो चीत रोते ॥ प्रभु र समार होर
[illegible] ते ॥ यया ॥ २६ ॥ ररा र सक रसीला
नाथ ॥ श्रीवल्लभ जी ने [illegible] ता री साथ ॥ प्रभुर
[illegible] सब सत्तीट [illegible] ॥ रीरे कमल मा
रखो [illegible] ॥ प्रभु [illegible] श्रा [illegible] नाथ ।
॥ ररा ॥ २७ ॥ लला ला [illegible] जी [illegible] लम संग ॥ कुंबी
[illegible] लो कना [illegible] रंग ॥ ललता जी लीला
मन धरे ॥ श्रीजीवा तसर वे पर हरे ॥ तप
तटा लीशी तलकरे [illegible] ॥ लला ॥ २८ ॥ ववा
वस था ये [illegible] चंद ॥ तारे पीटे सकल दु
ख दुंद ॥ दुख [illegible] संसार ॥ प्रभु वीनी
कोई न करे वार ॥ मनथी मुकी देनी फंद ॥
श ॥ ववा ॥ २९ ॥ श [illegible] ॥ श्याम सुंदर सुखकारी ॥

नीरखी नीरखी ह्रदे पर वलीहारी ॥ मो र
खीन पलट ले तनतणी ॥ मनमथ थई शी नल
ताचणी ॥ तन मन जनदे जे वारी ॥ श्रश्र ॥
॥३०॥ सासा सुख मासु तोर ह्यो ॥ प्रभु सा
मर ण नो मर मन लह्यो ॥ तारुं मारुं कर
तो फरे ॥ नंदर जस्या मो स्या ... न करे ॥ ते
नो जन मम थया जु गावत ह्यो ॥ सासा ॥३१॥ श्र
श्री श्री ह्री सहा प ण श्रेह ॥ जन म ... मनो श्रे
सु सनेह ॥ नमी नमी ने श्री वल्लभ ठाम ॥ च
... कमल माथ ये धो दीसरांम ॥ हरीवरीका
कुसु कहु तेह ॥ श्रश्र ॥३२॥ हृदा ... हरी
साथे साचु ॥ श्रेरंगे ह्रुश्र तीसे राचु ॥ ...न
जांणीने प्रभु की चीसार ॥ मारे तो श्रेनो श्री
कार ॥ द्रढ श्रास रेवी नासरवे काचु ॥ हृदा
॥३३॥ ... क मनसु तकरी दया ॥ ते स्थ

को सं पुरण श्राया ॥ दीनदयाल कृपानी
सागर ॥ मन वांछीत फल ... पुरे श्राग
र ॥ वडी जाता रारवी करी मया ॥ लला ॥३४॥
दा दा ह ण हाण श्रेची तच रे ॥ वीजी वात स
र वे पर हरे ॥ श्री मथुरेश मनोरथ पुरे
... कह दुख दाली दर चुरे ॥ सदा यम नजी
रं ... नो करे ॥ हदा ॥३५॥ ज्ञा ज्ञा ज्ञान
... जाण ता र स ना श्री वल्लभ नाम ब
खाणु ॥ हृदी ... प्रभु पुरण कांम ॥ सो
नी रखी पोती हाम ॥ श्री मदनमोहनजी
ह्रदे वंची तन्वर ठांण ॥ ज्ञा ज्ञा ॥३६॥ श्री ॥ श्री ॥

कौल॥ः॥सखीआवोनीआजवधांम
णा॥श्रीमुरलीधरजीनेचांमवालोनल
आवीया॥१॥नीरखीनीरखीनेलीजेरे
जांमला॥श्रीगोरधनजीछेनामवालो॥२॥
सांवणवददसमीनोदीन॥प्रगट्याछेप्रा
णजीवन॥वालो॥३॥जीरेनोरणकारखं
थायछे॥मोतीनाचोकपुराय॥वा॥४
॥जीरेजा[illegible]तकरमतीयाथायछेमली
माननीमंगलगाय॥वा॥५॥सुणीजस
कजनसरवेथायछे॥सनमानसकोन
अपाय॥वा॥६॥श्रीवीठलनाथजीकेलाल
मंनमां॥जोडीआततणीचनचेलावा॥
॥७॥रुपेरुडोबहुगुणवंतछे॥सामना
तांहुरखेचीतवालो॥८॥अतोपुरण
पुरसोतमअवतारछे॥अनीतीला
अपरमपार॥वा॥९॥मीत्रवींदाव

हुजीघेआयालालजीरवेलेओबदक
रेघणवालवालो॥१०॥वैसवजनना
प्रतीपालछे॥श्रीमुरलीधरजीनाला
ल॥वा॥११॥नीतदरसनकरवाआस
छे॥जदासनेराखोपास॥वा॥१२॥
॥श्रीकृस्णायनमे॥ः॥श्रीगोविंदजीकृपाकरीनेंद
रसनमनेंआप्यां ॥मुखडांजोईन
वरसागरबनादुखडांसरवेकाप्या॥१॥
वालोसुंदरबहुरगारंसीयाछे॥वालो
दीलडेअमारेवसीयाछे॥मीठीवातकरी
घणुहसीयाछे॥श्री॥२॥मुरलीधरजीनाछे
लाला॥वैसवजननेघणुछेवाला॥अतोछेल
छबीलानेछोगाळीला॥श्री॥३॥गोवरधन
जीनाछेआत॥अतोजमनावेटीजीनाछेता
त॥सानेंकोजांएजुगवीख्यात॥श्री॥४॥श्रीमी

त्रवींदावहुजीये जायाछे॥ जेने वेद पुराणे गायाछे
॥नीजजनजोई अतीहरखायाछे॥श्री॥५॥श्रीजा
मनीवहुजीपधरायाछे॥जेणे गोद लईलडाव्या
छे॥सेवे श्रीजीने मन भाव्याछे॥श्री॥६॥वैशाख
वद चौदसनोदीन॥प्रगट्याछे व्रजजनजीव
न॥नीरखेछे तेजनपावन पावन॥श्री॥७॥श्रीकु
सप्रीयावहुजीनाछे कंथ॥प्रगट्याछे पुस्टीने
पंथ॥वालो सुंदरछे बहुगुणवंत॥श्री॥८॥श्री
मुखपुनमनोछे चंद॥अणीयाला लोचन अर
वीद॥वरखेछे रस आनंदकंद॥श्री॥९॥नेर
स्थल अतीवीसालछे॥जेनाअंजां [illegible]हुस्याल
छे॥गजराजकलपनी चालछे॥श्री॥१०॥सुंदरता
चारनंदनकावेछे ता वीठलवर नेमनभाव्याछे॥
वैसवने मोंईपजावेछे॥श्री॥११॥नरखीने रूप
रदेखो अमनागुणरसनाअे भाखो॥व्रजसेवक

नेचरणे राखो॥श्री॥१२॥:॥

॥श्रीकृष्णायनमः॥अथउत्सवभावनांतथासामिग्रीना
वनालिख्यते॥ भाद्रपदवदि॥७॥ कों॥पागपिछोराक
सूंभलधरित॥पातेजोअनुरागसंबंधनहे॥जन्मके
पहिलेंही॥तथासांतमोंकोंश्रृंगारअष्टमीकुमंग
लाशीरहें॥सोकसूंभलसूतकोसूचकहें॥सगरेव्र
जभक्तनकोंअनुरागरूप॥राजभोगमेंकछसामीग्री
विशेष॥काहेतेंजसोदाजीकेकूषमेंप्रगटहें॥स्वामीकों
प्रेमभावहुतो॥ताकेलीयेंअगमासाकीसामिग्रीकरी
हुती॥पूरीसीराफीकेखाजा॥सोंभकीबुकनीलोनमि
ली॥साकसधानोबूराटूध॥सोसगरेगोपजेंवेकेलीयें
बुलायेहुते॥सोप्रथमजसोदाजीद्वाराप्रभुनअंगीकार
कीये॥काहेतेंव्रजभक्तनकेभावरूपसामिग्रीहें॥सीरा
मुख्यश्रीस्वामिनीजी॥दूधश्रीयमुनाजी॥फीकेखा
जाश्रीचंद्रावलीजी॥सोंभकीबुकनीसाकसधानोंहे॥ता
मेंबुकनीसधानोंकुमारिकाकोसीतकार॥साकमेंसग
रेव्रजकीस्वामिनी॥पूरीमेंनंदरायजीकेघरकीबहूगो

भाव· पीगुरजनके भावतें ॥ या प्रकार जसोदाजी द्वारा न्यारो
१ गा ॥ पाछें सगरे व्रजके गोपगोपी कों अंगमासा को ज्यो
नार कीयो ॥ सो भाव ऊपर गोप्य राखे ॥ छठी को पूरीक
हे ॥ सो यातें प्रभु छठ दिन के भए ॥ तब पूतना आई ॥ ता
तें छठी रहि गई ॥ सो बरस दिन पीछें जन्म दिन आयो
सो जनम दिन के भीतर छठी पूजनी ॥ तातें जन्माष्ट
मी की रात छठी पूजे ॥ तातें छठी की सामग्री ऊपर लों
गनै सो कहे ॥ भीतर अंगमासा को भाव हे ॥ तातें बरस
के बरस नंदरायजी कि ह्यां सब मीको बधाई गवाई सी
रा पूरी बुंकनी देत हैं बस्त्र खिलौना करत हैं तातें सब …
प्रकृति रूपा को दान है तातें पवित्रा एकादशी चंद्रावली
जी को दिन है ॥ दानलीला के सुख पायो ॥ तातें पवित्रा
बधाई गावत हैं ॥ फुलल धरत हैं खिलौना रखिवावत
हैं ॥ आभूखन बस्त्र सब जन्माष्टमी को आगम को उ
त्सव करत हैं ॥ पवित्रा को पुष्टिमार्ग प्रगट भयो तातें ब
धाई ॥ जन्माष्टमी को न्योता तारसा … पुष्टि पुष्टि पुरु

नंदोंवदी ८ मी

बात मको है ॥ तहां कोई कहे ॥ जो राछिनो पन सूर्य बखो
ति भादों को महीना कृष्णपक्ष बुधवार रोहिनी नक्षत्र
रूपादि निसि छिन में प्रगट होय रहे हैं ॥ श्रीकृष्ण विरुध
धर्माश्रय है प्रगट होय पालना बिध को उत्तम ते उत्तम कीए ॥ ता
तें कहे हैं का… परम सो मन ॥ यह पुरू बात प्रमाने [?]तिशो
है ॥ जो … साधन जीव सर्व प्रकार हीन तिनको अंगीकार
करनो है तातें ॥ ऐसे दिन प्रगट होइ उत्तम ते उत्तम फल की
ए ॥ जन्माष्टमी को मंगला भोग धरें पाछें मंगला आर
ती करि पाछें पंचामृत स्नान की तैयारी करत हैं ॥ मंदिर
की तिवारी के बीच अष्टदल को कमल कोरी हरदी को व्र
जकमल आकार है ॥ यातें प्रभु लाल हरि यारि को पीतांब
र नारंगी रंग के वस्त्र श्रीस्वामिनी जी के अंग रूप हैं ॥ तहां
श्रीनंदरायजी को मातान पांचित चाकरे हैं ॥ सो जन्म दिव
स जानि व्रजके गोपगोपी सब दरसन कों आई हैं ॥ नाना
प्रकार के बाजे बाजत हैं सुवासिन गान करत हैं ॥ नंदालय महा
अलौकिक हे ज्यों ज्यों नीर होत हैं ॥ सो त्यों चोक बड़ो होत

भाव. २

हे ॥ प्रभू सगरे व्रजभक्तनके सन्मुख दृष्टि करिकें मंदहास्य
सो सबको मन मोहत हें सो उनकी जडता चाकीपर बेंगहें ॥ सो
वारंवार उगतहें ॥ तब मातृचरणनकें प्रार्थना करिवे ग
वतहें ॥ तब श्री[illegible]ठाकुरजी हस्तकरिकें श्रीस्वामिनीजी
को वालनमास्सो निकट वेगवतहें ॥ या भावतें श्रीस्वामि
नीजी हू पंचामृतसों स्नान करतहें ॥ अनेक गोपीयूथ
रमारिकें जलपंचामृतको साजलीयें ठाढीहें ॥ सिंघास
नआगे चाक सो व्रजभक्तसबनको हृदय ॥ तापर चरा[illegible]
सो श्रीचंद्रावलीजीको हृदय ॥ तापर चोकी लाल[illegible]या
ई श्रीस्वामिनीजीको हृदय अनुरागरूप ॥ चोकीपर [illegible]
मल सोकूं स्वरूप ॥ पूर्वमुख यातें गिरराजतें [illegible]
कुलपर्वतातें श्रीस्वामिनीजी सन्मुख ॥ [illegible]
चंद्रावलीजी करतहें ॥ काहेतें प्रहप्रागट्य [illegible] तिस[illegible]कुमा
रिका अर्थहें नित्यलीला तो श्रीस्वामिनीजी श्रीजमुनाजी
संग सदाहें ॥ तातें कुमारिका सब देतहें ॥ श्रीचंद्रावलीजी स
मर्पतहें ॥ कुंमकुंम उद्दीपन भाव अक्षत लगाइ पीरे ॥ श्रीस्वा

मिनीजी सों सगाईको टीको यह संबंध करतहें ॥ तुलसीच
रनारविंद पर धरतहें सो श्रीस्वामिनीजी श्रीअंगको गंध र
॥ प्रियांगगंधसुरभी तुलसी चरणे प्रियां समर्पयामि ॥ मि[illegible]
दाहिहरे दुह मलौकिक ॥ तथा अलौकिकरूपाको समर्पनया
हीसम यासखिजियोहें ॥ पंचामृतमें तुलसी डारतहें ॥ सो
श्रीस्वामिनीजीके संबंधतें रसरूप होइ ॥ वीजा ॥ २ ॥ होपद्दा
उभीरहोकक्षे अधर रसके भावसो ॥ पाछे हाथमें जल
लेअर्घ[illegible]लेसंकल्प करतहें ॥ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य
[illegible]वतार मा[illegible]चोतस वंकेतुतदंगत्वेन पंचामृतस्ना
नंकरिष्ये ॥ पाककार[illegible]तिरूपावेह्कीरिचाहें ॥ तातें वरम
[illegible]सो अलौकिक संबंधकरतहें ॥ सेषश्रीमुनाजीहें ॥ संख
सोनेसों पीछें मडतहें ॥ सो श्रीस्वामिनीजी हें मुख्यस्वरूप
तीनरेषा सो श्रीस्वामिनीजीकी कंठकी तीनरेषाहें ॥ स्नान
समय यह श्लोक पढतहें ॥ स्वरूपरसदानार्थं तापानंतर
भावतः ॥ प्रियांगसंगनीरेण स्वामिसक्तो भवभवो ॥ १ ॥ अथ
मदूध सो श्रीस्वामिनीजीके श्रीअंगको भाव ॥ पीछें रही

ाव· ३

सोश्रीचंद्रावलीजीकोभाव॥ बूरामिष्टसु रूकुमारिका
मधुश्रीयमुनाजीसमस्तव्रजवृंदावनकीवनस्पतीरूपस
मस्तव्रजभक्तनसोंमिल्योभावहेंघीसबनकोस्नेहरूपहें॥
पाछेंफेरदूधसोंन्हवावतहेंसोश्रीस्वामिनीजीकेभावमें
मग्नहें॥ पाछेंसीतलजलसोंतापनिवर्तिकरतहें॥ पाछें
केसरिश्रीस्वामिनीजीरूप॥ चंदनकुमारिका॥ कपूरज
रतहेंसोश्रीचंद्रावलीजी॥ जलश्रीमहारानीजीफेरिसीत
लजलसोंस्नन्हवाइहृदयसीतलकरतहें॥ पाछेंमीडसर
काउटेराहेंअभ्यंगस्नानउबटनोंआंवलामेंहरदीसके
सरिकीकटोरीस्वामिनीरूप॥ तेलकुमारिकाकेभावरूप
तुलसीकीबुंकनीआंवलाश्रीमहारानीजीहरदीयाहे
मंगलाचारचंदनश्रीचंद्रावलीजी॥ जलतातेंसोश्रीचंद्रा
वलीजीआदिसबभक्तनकोविरहरूप॥ पाछेंफेरअभ्यं
गस्नानकरावतहें॥ प्रभुश्रीस्वामिनीजीकोयहजतावत
हेंजोयहमेराप्रागट्ययकतुम्हारेलीयेहें॥ तातेंसगरेउ
त्सवमेंश्रीस्वामिनीजीश्रीचंद्रावलीजीश्रीमहारानीजी

कुमारिकाआदिलेकेंअभ्यंगस्नानकरावतहें॥ तातेंयहश्री
स्वामिनीजीकीक्रियाहें॥ तातेंउत्सवकेदिनटीकेंतकोशृं
गारअंगवस्त्रकोछेडारंगलेतहें॥ सोश्रीस्वामिनीजीकोअं
चलरूपहें॥ केसरीकुलहश्रीस्वामिनीजीरूप॥ किनारीह
रीसोश्रीयमुनाजीरूप॥ तापरचंद्रिका॥ ५॥ मुकटाकार॥
सोश्रीचाचाजीचंद्रिकाकोंसदामुकटधरतयेहें॥ कुलहमें
डोरीश्रीचंद्रावलीजीकोहृदयरूप॥ कुलहपरगोटीकुमारिका
केरूप॥ [illegible]ताश्रीयमुनाजीकेदोऊतटहसरूपबीचमेंपा
गश्रीस्वामिनीजीकोअधररूपचंद्रिका॥ ५॥ मेंचारोंजूथप
तिनकमेंसमस्तव्रजकीस्वामिनीललितादिकसखीरूप॥ चा
कदारकेसरीवागाश्रीस्वामिनीजीकीसाडीरूप॥ व्रजवासि
नसाडीमेंमाथेपरदूसरोहूकलगावतहें॥ सोइहांचाक
हें॥ सूथनलालश्रीस्वामिनीजीकेलहंगातथाव्रजभक्तन
कीचोलीरूप॥ तनियालालव्रजभक्तनकोनिजअंगभा
व॥ तनियामेंफुंदनो[illegible]सोलहंगाकोफुंदी॥ परकालाल
सोश्रीस्वामिनीजीआदिसमस्तव्रजभक्तनकेअनुराग

सोप्रभूसंबंधहे॥ पडुकामेवागामेकुलहमो[illegible]नारीहे॥ सोश्री
यमुनाजीहे॥ तरंगरूपफूलरुलाटश्रीस्वामिनीजीकोश्रृं
गारश्रीचंद्रावलीजीकरतहे॥ श्रीचंद्रावलीजीकोश्रुतिरू
पावारीसखीकरतहे॥ केसरीसाडीअपनेअंगरूप॥ चोल
लीस्यामप्रभुरूपहृदयस्थितलहंगाआभरणलालअ
नुरागरूपकाजरासिंदूरकीटीकीआदि॥ पाछेंदोऊसरूप
कोकमलपत्रदोछिनहूनागवराजतहोयेतातिनहूंकोक
मलपत्रसखीजनव्याहकोअनुकरनकरतहे॥ वेनुनंदको
पकुमारिकादेतहे॥ वेनुरूपश्रीचंद्रावलीजी॥ वेनुमेंअध
रामृतरसहे॥ सोश्रीआचार्यजीश्रीस्वामिनीजीवेनुमेंसं
मकालरकतहेसोभक्तनकेआभूषणहे॥ वेनुमेंसातछि
द्रसातबालक॥ वेनुमेंअनेकतानअनेकस्वामिनीरूपस
गरेबालक॥ नारंगीरंगकोपीतांबरउढाइयेसोदोऊसरू
पकोएकगरेकरिगांठिजोरी॥ कहूंवसंतखेलतहे॥ केस
रिश्रीस्वामिनीजी॥ गुलालकुमारिका॥ अबीरश्रीचं
द्रावलीजी॥ चोवाश्रीयमुनाजी॥ सिंहासनश्रीचंद्राव

लीजीकीगोदगादीश्रीस्वामिनीजीकोहृदय॥ तकियादो
ऊदिसकेदोऊहस्त॥ पीछेकोतकियाहृदयसोश्रीचंद्रा
वलीजीदोऊस्वरूपकोलगाएहे॥ तकियामेंफुंदनाआ
भूखनपहिरेहे॥ गोरस्वरूपमेंकमलपत्रकस्तूरीको
स्यामपरकोमकुमुकोगुंजासगरेआभूखनकोआदि
घि[illegible]फूललालस्वामिनीकुमारिकादोऊस्यामश्रीयमु
नाजी॥ स्वेतश्रीचंद्रावलीजी॥ पाछेपारमेंतिलककोसा
जासिंगारकरतहे॥ चंदनवारद्वारद्वारपरस्नतकतभूमेलिपे
गाड़हे॥ आरश्रीस्वामिनीजीकनरवचंद्रमेंतप्पाश्रीस्वा
मिनीजीकेहृदयस्वरूपमेंभगवदअपनेपेकोदेखिकेप्रसंन
होतहे॥ फूलकीमालसमस्तस्वामिनीरूपहे॥ वंदनवा
रआभूषनमोतीमानिकसोनेकोकपराकीजरीकीफूल
पताकीमोतीमानिकसोनाश्रीस्वामिनीजी॥ कपराश्री
चंद्रावलीजी॥ जरीश्रीयमुनाजी॥ फूलपताकुमारिका
आदिसकलव्रजकीस्वामिनीयापाडारडारसाथियाने
कगरगरपूरेहेभक्तरूप॥ चूनआरतीमोतीकेबीचपार

भाव

५

मेंधरिपाछेंनारियरकोंकुंमकुंमलगायदोपवारअक्षत
लगाइयेंदोऊस्वरूपकेंभावतें॥पाछेंप्रकारश्रीस्वामिनीजी
केंवेंदीलगायअक्षतलगाइये॥दोऊओरदोपनारिय
रदोयमुद्रातथादोपपावलीअधीभेटनकरिये॥नाद्ध
परश्रीचंद्रावलीजीकेकुचस्वरूपकुंमकुंमअंगरागमध्यकों
समर्पे॥आपनेंकुंग्नतेप्रभूपधारेहें॥सोव्रजभक्तअपनों
सौभाग्यसुफलमांनिभेटधरतहें॥तथाटीकालावतहें॥
धरधरतें॥वीजदोऊदोउरसिसधारिआरतीकरिहृदयता
पन्योंछ्वासरिकरतहें॥पाछेंरूपैयातथापावलीहाथपेंले
जललेसंकल्पकराइये॥भगवतःश्रीपुरुषोत्तमस्यअ्रा
पुस्याभिद्धध्यर्थेआरोहांर्थद्वंगोदानं[illegible] तिष
वंपप्यानांमगोत्रायब्राह्मणायदानुमहंक दिसंप्रथा
समुत्सृजे॥पाप्रकारकरिब्राह्मणब्राहितकोदीजेगोपा
नरूपैया॥पाछेंपीतांबरउढाय मालापहिरायतिलकक
आरतीकरतहें॥कहूंगोदानपाहिलेंतिलककरतहें॥कहूं
पीछेंकरतहें॥भेटनोमीकेदिनसंध्याआरतीताईरहे॥

अत्रस्ह हृरंलब्धना

भरआरतीहसोमार्कंडेपूजावत्॥याहीतेंस्रंगारपीछेंभो
गमेंतिलओरनाइधगुडकेहूंकमार्कंडेपूजामेंसुन्नहें॥
चमचातथाकटोरीमेंदूधधरिभोगधरें॥सातिलंगुडसं
मिश्रंमें[illegible]धूतंपयः॥मार्कंडेपा[illegible]पिबा८
म्याँयुःसमरूपे॥१॥पहनेंदालपकोभावजन्मदिनको
फथितकारीति॥पाछेंगोपीवल्लभभोगवेस्मवकेध
रिसीरास्नोग॥पीरीफेंनीश्रीस्वामिनीजी॥स्वेतफेनीश्री
चंद्रावलीजी॥सकरपाराश्रीस्वामिनीजीकेनेत्रबूंदीके
लड्वाश्रीस्वामिनीजीकेकुच॥छूटीबूंदीकुमारिकाके
कुच॥जलेबीश्रीचंद्रावलीजीकेअधर॥सेवश्रीस्वामिनी
जीकेंअधरामृत॥बूराश्रीयमुनांजी॥घीव्रजभक्तनको
स्नेह॥आसमनश्रीचंद्रावलीजीकोअधरामृत॥मुख्य
वस्त्रअंचल॥तांबूलचर्वितधैयाग्वालभोगकेमिसस्वा
मिनीजीकोअधरामृत॥पाछेंराजभोगमेंधरपदीप॥षी
र॥नराछाछके॥तीनचूडा॥पूरी॥साकदही॥मांखनपा
पर॥दहीभात॥सिखरनभात॥बूंदीकेलाडू॥सेवकेलडु

भाव. वा॥ मेवाती॥ गेंदा॥ मम्री॥ कचरिया॥ पनो॥ साक॥ २६॥ को
६६ जीतुलसीसंखोस्क॥ पाछेंआब मनमुखवस्त्रवीरीभीरा
आरतीमोतीकी॥ पाछेंनित्यकीरीतसेंजासमयउत्थापन
सेनआरतीप्रहर॥ ४॥ रातगयेहोइ॥ जन्माष्टमीकेदिनउत्था
पनभयेपाछेंसिज्याउठायरावे॥ सोनौमीकोराजभोगस
मयाबिछे॥ काहेतेंब्रजवासिनकेघरसोयरातजागेहें॥ एक
जनमदिनको॥ एकदेवकाजप्रबोधनीको॥ सोजनमदिन
केरतजगमेंबालकहेंकोंजगावनोंयहरीतहे॥ तातेंसेज्या
नबिछे॥ औरदेवकाजमेंघरमेंबडोहो यसोजागे॥ तातें प्र
बोधनीमेंनंदरायसोदासगरोपरक्करिजागे॥ सेज्याबिछीरहें॥
ठाकुरजीमनआवेंनंदरायजीपासहूजेवेंगे॥ मनआवेंतो
जपरजाइपोढेंयहरीत॥ काहूमंदिरमेंपलंगहेंजोसेज्या
मंदिरतेंसीघासनताईं॥ पेंजोबिछायजागरनकें॥ तो
उघुलें॥ सिज्यापासश्रीस्वामिनीजीकेवस्त्रआभूषनमे
ढापरधरिये॥ वामादिसस्त्रनेकसामिग्रीधरीये॥ बीडा
मालापंखाआरगजाझारी॥ भोगश्रीचंद्रावलीजीकेकपो

पोल॥ लाडूश्रीस्वामिनीजीकेकुच॥ मोरवनामश्री
अधरामृतइत्यादि॥ पाछेंवधाईमाहात्म्यकेमगारनके
गाइये॥ महात्मकेश्रुतिरूपाकेनारके॥ वसुदेवदेवकी
संबंधीकुंमारिकाकेनंदरायजीकेघरकेश्रीस्वामिनीजीके
भावके॥ याप्रकारजवअर्धरात्रमेंघडीदोयबाकीरहें॥ म
हानिसाव्रतखंडपाटउगायदेरादेंपंचामृतकीतैयारीक
रें॥ भोगसबूपरहें॥ तवजन्मसमयकेसाढेंआठश्लोकप
ढतहें॥ अथसर्वगुणोपेत:काल:॥ परमसोभन:॥ इत्या
दिसाढेंकेघंटाएकबारवजायदेराखोलनो॥ यहश्लोक
श्रुतिरूपापढतहें॥ पाछेंब्रजभयोमाहिरकेंपूतजवयह
बातसुनी॥ यहवधाईगाइये॥ सिंगासनआगेमंदि
रवस्त्रकरिकोरीहरदीकोचोककरि॥ तापरपरातधरि
तामेंवाकोधरि॥ लालदरियाईकोपीतांबरविछाय
पंचामृतमेंतुलसीडारिभगवानकोंउंचतककरिसंकल्प
करि॥ येसंकल्पकरियेहाथमेंजललें॥ भगवत्श्रीपुरु
षोत्तमस्यप्रादुर्भावोत्सवेंकर्तुंपंचामृतस्नानंकरिष्ये॥

भाव ॥ ४ ॥ यहपाछेंजलछोडिभावेंसालिग्रामतथागिरिरा
७ जकोंपधरायपंचामृतस्नानकरायतिलककरिसा
लिग्रामकोंपंचामृतमेंतथाचरनपरमहामंत्रसोंतु
लसीसमर्पिन्हवाइये ॥ ताकोकारनयहहे ॥ सालिग्राम
विस्नुरूपहें ॥ विस्नुकोपालनधर्महे ॥ तातेंसालिग्राम
कोंमसहेकर्याविस्नुरूपन्यारोविस्नुसर्वगृहाश्रपालावि
रासीतऐसेस्पर्शपुरुषोत्तमविस्नुतिनकोसेवनकरि ॥ य
हांनिश्चयपश्चातरूपाकियोजोहमारोपालनपेहीकरेंगे
याभावतेंपंचामृतस्नानकराइये ॥ घंटान्नादिवाजन
वाजते ॥ प्रथमदूधपीछेंदहीघृतबूरापीछेंमधुपीछें
संखमेंएकदूधसोपीछेंसीतलजलएकसंखपछेंके
सरिचंदनसोहाथमेंलेस्नानकरायपीछेंकेसरभूके
पासवेगारिपे ॥ पाछेंप्रभूकोसालिग्रामकोलालरंग
पारिकोवस्त्रडगायदोऊगरुवसंतरखिनाइये ॥ केसरि
चोवागुलालअबीर ॥ इंडोंतकरिमीडसरकापरसादेप
नोंमिश्रीकोधरिये ॥ तामेंकपूरामिरचडारिये ॥ मिश्री

कृ

स्वामिनीजी ॥ कपूरश्रीचंद्रावलीजी ॥ जलश्रीयमुनाजी ॥ मि
स्त्रीमारिकासीतकार ॥ याप्रकारप्रभूकोजन्महोतहीब्रज
भक्तनअपनेअधरामृतकेरसकोस्वादचषायो ॥ पालना
वतेंसदाइहांस्थिरविराजे ॥ याहीभांतिमहाभोगमेंप्रति
[illegible]गअनुभवकरावत[illegible]तहें ॥ तासमयश्रीगोकुर
जीकोमुखकमलअत्यंतप्रफुलितहोतहें ॥ वंदनवारबांधत
हें ॥ [illegible]गवआगन्यहोतमात्रलक्ष्मीघरघरप्रतिवंदनमा
लाबांधत[illegible]लतहेंब्रजमेंस्थिरकेकेरहीहें ॥ पाछेंपनोभो
गसरपन्नाचमनमुखवस्त्रकरायपछेंबीराधरिपाछेंन
इवंदनवारबांधि ॥ पीछेंमंदिरवस्त्रदेकेमहाभोगधरें ॥ का
हूंमंदिरमेंधूपदीपतुलसीसेंषोदिकहें ॥ कहूंनाहीहें ॥ सुगं
धकेलीयेंधूपएकपात्रमेंकरनो ॥ उज्वलभांतश्रीचंद्रावली
जीकेहास्यरूप ॥ सागीवांवरब्रजकोहे ॥ तातेंपूरबवारीकुंमा
रिकाकेनावतेहें ॥ दारमूंगकीधोउीनरमकुंमारिकाकेना
वतें ॥ गदेमेंगराश्रीचंद्रावलीजीकेनावतें ॥ पापडमेंगरूपश्री
जमुनाजीकेपुलिनकोमंडलरूप ॥ मिस्ववडीतामसी ॥ ति

भाव॰ लवडीराजसीतीनकुंडामेंचारोंचनाश्रीस्वामिनीजी॥
८ वडीजलश्रीयमुनाजी॥मिस्वश्रीचंद्रावलीजीआगेकुं
मारिका॥मीगासाकनिजभक्तनकोभाव॥सागीचावरकी
खीरकुंमारिकाकेभावतें॥सेवकीखीरअकतिरूपा॥मेवा
कीखीरश्रीयमुनाजी॥मानिकाकीखीरश्रीस्वामिनीजी॥
दहीभातश्रीचंद्रावलीजी॥मीगोभातश्रीस्वामिनीजी॥सि
खरनभातश्रीयमुनाजी॥षाटोभातकुंमारिका॥पीरोभा
तललितादिव्रजकीस्वामिनी॥वडीभातहधगोपीजनकेभाव
तें॥रायता॥साक॥विलसारू॥छ्याछिकेवडानिजभक्तद्र
वीभूतश्रीयमुनाजी॥कांजीश्रीचंद्रावलीजीकेभावतेंक
पालखंडन॥आद्यापावरीनीवूतामसीकोसीकार॥दही
वेसनकीतामेंहीगजीराजारें॥प्रस्थाव[illegible]॥सोग
कीचुकनी॥साक॥धरोंकेभावतें॥भुजेना॥ष[illegible]नामि
ष्कसाकचारोंकेभाव॥पापकार॥दहि॥भए॥मडलीका
रनए॥षोडषगोपिकामध्येअष्टसखी भवंती॥मगर
हीसिखरनवासोंरी॥वडीमेंआंवलीजारतहें॥श्रीयमुना

जीकुमारिकाद्रवीभूत॥पाकआंवको॥गुलाबकेफूलको॥मा
धुरीकोचारोंकेभावतें॥जंवीरको॥विजोराको॥छुहारको
॥पगपाक॥पचांरोभावतें॥पनामिश्रीको॥षोडको॥द्राक्षके
भावतें॥पंजीरीजसोदाजीकोभाव॥चावरश्रीयमुनाजी॥बूरा
डारिदहीकोडांकतहें॥दसनखंडनकोभाव॥घेवरश्रीस्वामि
नीजीकपोलकेसरी॥खतश्रीचंद्रावलीजी॥सखोरीअगमो
[illegible]भावतेंरसभरेहें॥पीरीफेनीश्रीस्वामिनीजी॥खेतफेनी
श्रुतिरूपा॥बूंदीकेलाडूमोयाजीकेकुच॥छूटीबूंदीमोयाजी
के[illegible]॥सक्करपारानेत्र॥सेवकेलाडूअकतिरूपाकेकुच॥जले
बीअकतिरूपाकेअधररसश्रीस्वामिनीजीश्रीयमुनाजीमें
द्राक्षकुंमारिका॥आंग्योदूधमोयाजीकोअधरामृत॥सि
खरनवडीश्रीयमुनाजी॥इंद्ररसाफेअपरखसखसकेदा
नों॥सोहेतखंडननखक्षत॥कपूरनाडीमोयाजीकोहृद
य॥लोंगस्पामचोलीचारवंद॥मलाईश्रीमोयाजीकोअ
धरामृतामिश्रीकीचुकनीश्रीयमुनाजीअधरखंडन॥या
प्रकारराजितनेषटपकवांनवनिआवें॥आलोमेवा॥लोंनके

भाव० पकवानदाछिनदिसअकृतिरूपाकेमांवतेंसधानोसीतका
९ रयहधारियेंश्लोकपगनो॥निजास्पनवलास्यासमेनरस्वादु
भोज्यंमदार्पितं॥भुंक्ष्वश्रीगोकुलाधीसस्वाधिंव्याधिनि
वारय॥१॥आचमनविहारपीछेंअनुपानआचमनअं
चल॥वीरीमोढाजी॥वीराअकृतिरूपा॥ढाककेपताआपर
गुलावजललगायकेंबांधतहे॥साऊपरतेंवस्त्रपहिरावतहे॥
सीकेचोलीकीतनी॥वीराचर्वितताम्बूलरसअधरामृतपा
तअधरओष्ठसोंभीतरदांतकेरसराखेहे॥आरतीमोती
की॥कहूपालनोपरपधरायकेंहोय॥कहूंसिंगासनपर
होय॥पाछेंपालनांविराजे॥महांभोगधरिकेंसमेंपूज
नजैयें॥भपमगोपरछोनिकेंछगलीपतहे॥सुंधलहे॥
तामेंतुसनाहींरसरूपहे॥तापरतरोईपकोरसछानि
केंलीपतहें॥पछ्याव॥नभुपधारें॥सगरोछकरोहो॥
हे॥हरदीकीगांगनिजायछीलकाहूरिकारि तामेंचापानी
जेंचीसतहें॥सोएपनकहीएे॥हरदीश्रीस्वामिनीजी
कुंभांचावरकुमारिकामित्योनावहे॥पूर्वतेंआईहें॥ताते

छगीपूर्वदिसाधरिपे॥चोषूंटीचोकीवनांवतहे॥छगीकेमी
तरस्वेतरपकीकरतहे॥सोमातृचरनकोकंगुलावनावतहे॥
श्रीजीप्रगटहे॥तवरानीजीसुखमत्थामखनपाहिरहे॥चो
कीकंगश्री॥चाकीकंकन॥नकवेसरि॥वेंदी॥कटिकिंकनी॥नूं
पूरऊढी॥तातेंछगीकेआसपासमंडलाकारकरतहे॥सो
निजमहानित्यासिधामंडलाकारगढीहे॥पीतश्रीस्वामि
नीजी॥स्यामश्रीयमुनाजी॥लालकुमारिका॥स्वेतश्रीचं
द्रावलीजी॥हरीन्हांमिश्रीमहारानीजीकीपुलिन॥छगीके
दाछिनादिसदधिमथनीवनावतहे॥चरकोवाकुंनकुंनां
रकीभोरा॥वेगीचकडी॥सोमातचरनकेभावसोंश्रीजी
कोस्वरूपजसोदाजीमाखनदेतहे॥रईहरहीकोमाटपाल
नेकेवांमादिसवेंनुदाछिनक॥पालनाआगेगायगोपी
ग्वालनित्यलीलाकेंनकवांमादिस॥अकृतिरूपाकुमारि
कादाछिनदिस॥मंडलतीनकरतहे॥एकानित्यासिधाश्री
स्वामिनीजीश्रीयमुनाजीआदि॥दूसरोअकृतिरूपाकुमा
रिकाव्रजकीगोपी॥तीसरोसमस्तव्रजगोपगोपी॥ऊप

भाव. १०

रवेलचौरोंदिसालिखतहें॥ सोश्रीयमुनांजीमंडलौंकारस
वरसकोघेररहीहें॥ यहरसव्रजहीमेंरहे॥ याहीतेंश्रीयमु
नांजीद्रवीभूतहें॥ रसरूपपुष्टिभक्तप्राप्तिइंनहीसोंहे॥ छ
वीकेऊपरओढनीलिखतहें॥ सोश्रीयमुनांजीकेमंडल
ऊपरगिरराजधरापाकरिरहेहे॥ ऊपरकलसाहे॥ सोसिख
रहें॥ वालिमेंखाचोहेसोकंदराहें॥ नीचेंचौखूंटीवालिचारों
ओरबनावतहें॥ सोसगरोव्रजचोषूंटोहे॥ ताकेऊपरवंछीर
नावतहें॥ वेलवनस्पतीतापरपंछीवेठेहें॥ अष्टदलकम
लहैभक्तनकोमंडलहे॥ ताकेनीचेंहाथा॥ छवीकेआसपास
हाथा॥ सोनित्यलीलावारेभक्तनित्यलीलाकोस्थापतकी
येहें॥ छवीकोश्रंगारबीचमेंसिंदूरकाजरलालपीरेफूल
छुहीखडीलगावतहें॥ पीरेमुख्यश्रीस्वामिनीजी॥ स्वेतश्री
चंद्रावलीजी॥ लालकुमारिका॥ स्यामश्रीयमुनाजी॥ सो
रसवेलभक्तनकोसौभाग्यरूपहे॥ यहश्रंगाररसतेंव्रज
रूपभक्तप्रगटभएहें॥ सोसमस्तव्रजअनुरागसंजुक्तफू
ल्योहें॥ फूलकेंझूमिकाबांधितहें॥ सोभक्तनकेआभूखनको

झूमकाहे॥ मातृचरनश्रीनंदरायजीआदिसमस्तव्रजभ
क्तफूलेहें॥ लालवस्त्रेसमीधरतहें॥ सोवस्त्रभक्तपहिरेहें॥ अ
नुरागहृदयतेंप्रगटभयोहे॥ वेंनुलालधरतहें॥ सोवेंनुद्वारा
अनुरागपूर्वकसकलभक्तकोंबुलावतहें॥ तरवारधरतहें॥
सोनीतीमेंऊपरआवनी॥ सोसखबंधगोपश्रीनंदरायजी
[illegible]मुख्यहे॥ गायनकेसंगजातहेंउत्सवमेंसबकेआगें
होतहें॥ नंदालयकीरखवारीकरतहें॥ सोउनगोपनकेमन
मेंलगतहती जोएकपुत्रश्रीनंदरायजीकेहोइ॥ सोपुत्रको
जन्मसुनिकेसखनसाहितद्वारिकेंआएहें॥ तथादुष्टदोष
निवारनार्थखड्गहें॥ चमोकीढारिचांवरिमिलायखिचरी
कीडेरीछवीकेआगेंकरिए॥ जामेंस्वामिनीजी॥ औरकुं
मारिकाकोभावमिल्योहे॥ तापरहरदीकीगांठचूनकेफ
ला॥ धडारतहें॥ सोसंबंधहोंनअर्थसुधहे॥ यककटोरी
मेंघीतापकेंधरनो॥ एकदीवाघीकोधरनो॥ छवीकेआ
गेंकहूंकोरीहरदीकाचोक॥ कहूंकोरेचूंनकोचोक॥ हरदी
मुख्यके॥ चूंनआकृतिरूपा॥ केभावतें॥ ताचोकपरपीढाहोय

धरतहे ॥ पीगापरकुंमकुंमकेसाथियाकरतहे ॥ तापरपी
रीसारीपेकरझाऊपर बिछावतहे ॥ पीरीसारीनंदरानीके
भावतेंतापरजसोदाजीकृष्णकोंलेंबेठी ॥ नंदरायजीपासकूंले
बेठेहे ॥ छरीपूजनकोंपीरीसाडीसुंभतहे ॥ मोतिवडीहे ॥ का
रीतप्यालोटीपीतरकी ॥ तामेंकुंमकुंमलगायजलभरि
केंधरतहें ॥ तापरएकटोरारुपेकोलेतापरगुडकेदूंके
धरतहें ॥ आतिरूपाकुंमारिकासगरोलनुचरचाकरतहें ॥
वेआतिहें ॥ चारिबिहेंसर्वरीतकोग्यानहे ॥ दीवाधीकात
मेंबातीचारलगावतहें ॥ चारोंकेजावत्ते ॥ मावडदीपकन
योहे ॥ कहूंदोपधीकेदीवाहे ॥ विरहरूपीअग्नंधरकोरंग
याखीत्तरीपरदीवारहे ॥ भोहितस्वास्तिंकरतसोनाने
पुजावतहेंसंकल्प ॥ आचमनकरिअक्षतहाथमेंले
छरतलेविस्नुर्विस्नुराग्याप्रवर्तमानस्याद्यरेल्पादिति
थिआवणांतेश्रीमन्नंदराजस्याग्निनवजातस्यकुंमा
रस्यअनुदयार्थं ॥ षष्टिकादेव्याःपूजनप्रतिष्ठांकरि
स्ये ॥ यहकहिजलअक्षतआँछोडने ॥ छरीपरकुंम

कुंमअक्षतडारिये ॥ घीकीकयरीहाथमेंलेछरीकेबी
चोवीचतीनधाराकीजिये ॥ तीनतेंचारकेंजोपतोएक॰
आरकीजेस्नेहरूपजापवाहिचल्यो ॥ चारमेंचारोंजूथपति
एकमेंसगरे ॥ छरीकेऊपरलोहेकीकीलएकगाडितापर
रखीवछधारिये ॥ वासकीखपाचतीनकोनेंमेंफूलबां
धिकीलखावालिये ॥ पीछेंहाथजोरपहपढिये ॥ गौरीपु
त्रघस्कंध ॥ सिसु॰संरक्षितास्सदा ॥ तथाममाप्य
बालकोरक्षितावाष्टिके नमः ॥ १ ॥ कापैसो
गादेसपरिवारायैनमः ॥ पहपढिकेप्रार्थनाकरनी ॥ पा
छेंछरीपासरडीहेताकीपूजा ॥ अक्षतकुंमकुंमरडी
परडारिपहपढिये ॥ मंप्पानत्वंहिगालोकेदेवदेवेविनि
र्मितः ॥ पूजितस्वविधानेन ॥ सुतंरक्षांकुरूस्वमे ॥ १ ॥ पा
छेंछरीपासखडगकीपूजाखडगपरकुंमकुंमअक्षत
डारिपहपढिये ॥ अश्वसिविसंसनः ॥ खड्गस्तीक्ष्णधा
रोदुरासदः ॥ श्रीगर्भोविजयश्चैवधर्मपालनमोस्तुते ॥ १ ॥ पा
छेंछरीपासमुरलिकाहेताकीपूजामुरलीपरकुंम

श्री

भाव. कुमञ्जध्वजत्रारिपहपढिये ॥ सर्वमंगलमांगल्य गोविंदेस्य
१२ करेस्थित ॥ वंसवर्धनमेवंस सदानंदनमोस्तुते ॥ ७ ॥ पा
प्रकारध्वजीप्राजिपे ॥ कहूमझंकोपलनामेपधरापध्व
जीपूजतहें ॥ कहूंमहाभोगधारिध्वजीप्राजिपाध्वे [illegible] पा
लनामोहरिको ॥ तिवारीकवीचोवीचासिधकरीए ॥ श्रुतिरू
पाकुमारिकापवित्रातेखिलावतहें ॥ पालनागावतहें ॥ प्र
थमपा[illegible] पैयासोरिझावतहें ॥ सोबालकनयोहेपपैपा
कीनोरीरोवतहे ॥ श्रुतिरूपाको भावजनावतहें ॥ तबफिरकी
फिराइये तबपपैयानवजायपे ॥ फिरकीलालरूपकी
थारीतयाकोसेकीथारीमेफिराइये ॥ तबबालक[illegible]तते
रहे ॥ फिरकीरूपभक्तलालरंगसोवस्त्रपहिरहेसोभक्तकी
तेकरनलागे ॥ भक्तकेलीयेप्रभूरोवतहे ॥ सोभक्तआप
तबरोवततेरहे ॥ थारीरूपहृदयलालरंगहृद[illegible]नुरा
गवाहिरप्रगट्योहे ॥ ९ ॥ चटकोराबजावतहें ॥ सोभक्त पर
नकेहृदयमेतथाराहिनीजीकेहृदयमेंचोकीहारधुक
धुकीहलतहें ॥ सोबाजतहै ॥ अथबाश्रुतिरूपाकुमारिका

प्रसन्नहोइकेंपुंदडीभ्रमतहें ॥ पाछेंहथबंगीफिरावतहें ॥
सोलालहें ॥ तथाधातकीहें ॥ सोमंडलाकारहेंधातुकी
श्रुतिरूपाकोमंडल ॥ काष्टकीकुमारिकाकोमंडल ॥ दधि
कांदोकरि निर्तकरतहें ॥ श्रीजीदेखिकेंहसतहें ॥ हाथमें
[illegible]हाथजोरिकेंविनतीकरतहैं ॥ जोयाहीभां
[illegible]हीहमसोंकरो ॥ चकडीफिरावतहें ॥ सोश्रीचं
[illegible]जीगोपजायहिं ॥ तामेंजोरीहेसोभक्तनकीचीर
है ॥ सो[illegible]लप्रभूपकरहें ॥ भक्तभ्रपुनेघरकोजात
हें ॥ [illegible]प्रभूचलपकरिकेंखेंचतहें ॥ तबभक्त फेरिप्रभु
पास[illegible]वतहे ॥ चकडीपररंगहें ॥ सोभक्तनकेवस्त्रहें ॥ च
कडीमेंरचोहें ॥ सोआभरनकेकनन्हेंपुरबाजतहें ॥ सूतत
काडोरीहें ॥ सोप्रभूकोभक्तकोहृदयएकसूत्रहेरह्योहे ॥
फुनफुनाहेसोभक्तनकेकेक[illegible]आगेंकोभूमिकाहे ॥ त
थामखतूलके ॥ फोंदहेंनोंलरकतहें ॥ बंगीफिरावतहे ॥
सोभूमिपरभक्तनकीआतुरतादेखिभक्तरूपहोइभ
क्तनकेमंडलमेंआइभक्तनकेसंगनिर्तरमनकरतहें ॥

भाव· तामेंतेसखानिकसतहे ॥ सोकुमारिकाआकृतिरूपागोनक
१३ रतहें ॥ हाथीदांतकीआकृतिरूपा ॥ काष्टकीकुमारिका ॥ ताप
रंगसाड़ीवस्त्रहे ॥ लेहाफिरावतहें ॥ सोश्रीनंदरायजी ॥
श्रीयसोदाजीकेभावतेंश्रीठाकुरजीगोपबालकवराव
र ॥ केसमानसंगानिर्तकरतहें ॥ मुख्यभाव यहहे ॥ श्री
स्वामिनीजीकेभावपररीझकेलडकेरहे ॥ रजसेंकह
तहें ॥ तेसेंश्रीप्रभुकरतहें ॥ हरिनडवारीहरिनडवाराधा
जूकेआगेलडवा ॥ झूमरपालनाकेऊपरबंधीहें ॥ ध ॥ सो
चारोंजूथपतिभक्तकेऊपरझूमिरहीहें ॥ तिनकेआसरन
लटकतहेंवाजतहें ॥ सोमातृवर्गकेआगेप्रभुबालचरि
त्रकोअनुकरनकरिकें ॥ बालभावसोंझूमरपकरिकेंऊ
हस्तसोंपकरतहें ॥ अंगपरसकरतहें ॥ तेआसरनवाज
तहें ॥ तातेंझूमरमेंचकतीचारहोतहें ॥ गोलागोपबालक
केसंगखेलतहें ॥ कुंमारिकाकेकुचरूपभक्तनकेभावसों
ऊंचेचलायभक्तनपरडारतहें ॥ तबभक्तबोकिपरतहें ॥ त
कडीमेंअनेकाखिलोंनासोंखेलतहें ॥ तहांअनेकस्वां

मिनीनकेजूथहें ॥ तिनकेसंगखेलतहें ॥ ततकडीदोऊद
सधरतहें ॥ सोतकेबामभागकाष्टकेदाछिनभाग ॥ सो
ऊकेभावतें ॥ बाघसिंघहरनरोझ ॥ साबर ॥ हाथी ॥ घोड़
ऊंट ॥ कुत्ता ॥ इत्यादिलीलाविरोधीपशु इहांनआयपेंके स
तबलीलामेंप्रतिबंधरूपगोपकोदीप्रवाहीइनकेलय
ते ॥ इहांकेआइसके ॥ जोभक्तहेंलीलासंबंधीसोदीआ
ताइनकोसुखरूपहें ॥ औरकोभयानकहें ॥ दूसरीतब
कडीमें ॥ सोपट ॥ मेंनाको इलसारसचकवाबतकककबूतर
सुआ ॥ इत्यादिपंछी ॥ यहपंछीद्वाराभक्तअपुनेंआप
नेंकुंजकीसमस्याकरतहें ॥ तथाप्रभु ॥ जहांकुंजमेंप
धारे ॥ तहांपंछीवालिकेंभक्तकोंबुलाइलेंय ॥ तथाप्र
भुकोंपंछीबुलाइसंकेतासिधकरतहें ॥ तातेंप्रभुकों
औरभक्तकोंपंछीअत्यंतप्रियहे ॥ जबविहारहोइ ॥ त
बसुयहोइआछिपकेलीलाकोदर्सनकरें ॥ गोपभक्त
रूपतबकडीमेंहें ॥ तिनकीओरप्रभुदेखतहें ॥ बहु
राग्वालडुहावनवारीभक्तनकेबेष ॥ काहूकेहाथमें

भाव· दोहनीकाहूकेगोदमेंवालक॥ काहूकेसीसपरमटुकी
१५ काहूकेहाथमेंगाय॥ कोटीप्रभूकोंपकरेहें॥ वच्छनीके
याप्रकारअनेककलीलारूपतक्कूडीमेंहें॥ प्रभूकोंसंके
तवतावतहें॥ मच्छरीकछुवामगरचकडी॥ चकवामुर॥
गाबगुलासारसहंसमोर॥ पनडुबीइत्यादिकजमुना
जीकेतीरकीलीलाजलविहारथलविहारकीभक्तश्राये
नाकरतहें॥ वस्त्रापिछवाइनईबांधतहैं॥ नेहयापजीके
घरलक्ष्मीनारायनकीपूजाहें॥ सोचारोजयंतीवदरी
तसोंयहव्रतश्रादितेंचलेश्रायहें॥ सोकरतहें॥ सोपुरुषको
तजन्मश्रष्टमीकोजनयो॥ ताकेलीयेपुत्रकीजन्मगांठ
हूकरतहें॥ औरव्रतहूकरतहें॥ पाछेसमस्तफोकिसी
रापूरीश्रगमासोफ्हदिनलिवायेहें॥ श्रष्टमीसोव्रतके
दिनजोनिराव्रतकोसगरोसामिग्रीकरिजन्मगांठकी
ज्योनारनोमीकेसवेरेहीकरनीहें॥ श्रष्टमीकोंवदरी
तसोउत्सवव्रतदोऊमानतहें॥ तातेरातकेदोयप्रकार
श्रापामिले॥ जन्मगांठिकीसामिग्रीउत्सवकीसामि

ग्रीउत्सवकीसामिग्रीतातेंमहाभोगकहें॥ सखडीमें॥ मी
ठाभात॥ षारोभात॥ पीरोभात॥ दहीभात॥ सिखरनभात
षीरचांवरकी॥ मनिकाकी॥ सेवकी॥ तीनकूंडा॥ द्राक्षकेव
रा॥ औसाडीबूराकीसेव॥ पजीरीपकवान॥ मिगाइीमे
वा॥ ... मेवा॥ औरद्राइध॥ मुरवामर्यादगोपमहीनो॥ ध॥
चतुरमासमेंरातकोभोजननांहीकरतहें॥ श्रोरजयंती
व्रतहे॥ तातेंसवारेलेतहेंनोमीको॥ वडेहूकसाककेभजे
लोनकेखरपरे॥ तामसीभक्तनकेभावसोंरसीलेसाकरा
जसीकेमीठेसाकसात्विककोके॥ सिखरन वडीसिषरन
भात श्रीयमुनाजीकेभावतें॥ दहीभातश्रीचंद्रावलीजी
मीठाभातकुंमारिका॥ खाटोभातगोपश्रायीयतिपुत्री
दिहेसमस्तगोपीकेभावतें॥ सेवबूरामेंरमनकोरसमु
ख्यउत्सवमेंहे॥ चांवरकीसामिनीजी॥ सेवकीश्रीचंद्रा
वलीजी॥ मनिकाकुंमारिका॥ मेवाकीश्रीयमुनाजीइ
त्यादिमहाभोगमेंश्रारोगें॥ पालनानंदयसोदागोपी
हघातिनकेभावतेंहें॥ भीतरगोपहूभावहें॥ कोरीहरदी

भाव· कोचोकस्यरूपे ॥ तापरपालनोपधराइपे ॥ विनोवरस्त्र भूमि
१५ पर ॥ कहेहरदीकेचोकपरस्वनोकीदारिचावरमिली षिच
रीसरदोपधरे ॥ तामेंहरदीकीगांगि ॥ ध ॥ जारें ॥ तापरडुली
चाविछापपालनोपधरावे ॥ पालनोंभक्तरूपहें ॥ रूमका
वांधतहें ॥ सोभक्तनकेआभूखनरूप पालनारोहिनी
जीसिधिकरतहैं ॥ सोव्रजभक्तनकेभावकोसहाइकरो
हिनीजीरें ॥ लटकनलटकतहे ॥ सोभक्तनकेकुंवरूप ॥ पा
लनाकेरोऊपाईसेंधारिपाहें ॥ सोचरनरूपचारोहें
आवपाये ॥ चारपालनाकेचारूलतहें ॥ तासिज्याकोधा
रियाहे ॥ सोभक्तहाथसोंहाथजोरेहें ॥ कलससाके परसी
सीसफूल ॥ रूमिरहेसोप्रभुकेसन्मुखद्रखनकोरहे ॥ त
थाहृदपके आभरखनहें ॥ लटकनधुंदिपोटकाफू
पहें ॥ पालनेंकीसांकलहेसोभक्तनकेहारहें ॥ पालना
परदरियाइउगावतहे ॥ सोभक्तनकेवस्त्रहे ॥ फूलकी
मालापालनेंमेंबांधतहें ॥ सोभक्त मालापहिरेहें फू
लनसोंवेनीगुहीहे ॥ फूलनकीवंदनवारहे ॥ झालरहेफू

लनकीहुंजरीकीहे ॥ सोललताकुंजहें ॥ गिरराजपरहस्स फू
लेहें ॥ श्रीपमुनाजीकीपुलिनमेंलताफूलीहें ॥ ताही
तेंपालनोंश्रीगुसांईजीरससरूपवलीनकोपोहे ॥ प्रेंसप
पेंसपने ॥ गिरराजकीकंदरामेंकुंजहें ॥ तहांविराजेहें ॥ ता
हीतें याकेलनाकेनीचेंविछोनाहें ॥ कहूंनांहीहें ॥ अनेक
स्वोसखीकेमनोर्थपूर्नेकरनार्थयाहीप्रकारजन्मसम
सखिलोनांहू दोऊभावकेहें ॥ चटरवटा ॥ फिरकी ॥ चूस
नी ॥ घूघराहथवंगी ॥ आदिपालनांमेसूत्राबांधत
हे ऊपरमोरहें ॥ सोलीलासंबंधीनिकुंजकेहें ॥ बालली
लाकेभावसोंमातचरननंदरायजीजांनतहें ॥ भक्तिकि
सोरवपकेजांनतहें ॥ गायवछरासाहिदोहनवारीवछरा
चोषतहें ॥ ग्वालकेहाथमेंलकुट ॥ गोपकेहाथमेंसेली
कितनेंवैठेहें ॥ कितनेंगाढेहें ॥ बानरहरन ॥ रोऊ ॥ साव
र ॥ चीता ॥ हाथी ॥ बकरी ॥ भेडमेंढा ॥ सिंघ ॥ सियार ॥ मो
रमेंना ॥ पोपट ॥ बुलबुल ॥ लाल ॥ मुनिपां ॥ चकोर ॥ पपे
पा ॥ बवकसारस ॥ कुलंग ॥ गोतावाजीकपोत ॥ चकरी

भाव. लेहू ॥ कोयल ॥ मछरी ॥ मगर ॥ मेंडुका ॥ मुरगाओ ॥ गेंद ॥ चो
गानगोली ॥ यहसबरहेतहे ॥ नित्यासिधाके आवते ॥ पा
२६ लनामें प्रभू पधरायतिलककोनारियर रूपैया पास
राषें ॥ पालनें मोषनामिश्रीकी कटोरीधरिये ॥ पतासो
ढाकिए ॥ पकवानझारीषिलोनानावा मंदिरसधरिये ॥ पाछें
पीतांबर सगरे उढाय ॥ रूपा सले नेटकरें ॥ कपराआव
सो उढायलीजे ॥ भेट आवेसो षिलोंनाकी नवकडी में वे
टीमें धरिये ॥ नंदरायजी कूंसगरेसंबंधीले आवें ॥ रूगा
टोपी ॥ आर्षवस्त्र ॥ हाथपावके बूडोन केलीपैरोक ॥ आ
नोएसोसो आय श्रीमहाप्रभूजी ॥ श्रीगुसांईजीदीए
हें ॥ याभांवतें सेवाकरें ने षवधरायवेकी भावना नंदरा
जी यसोदाजी ॥ गोपी ॥ ४ ॥ ग्वाल ॥ ४ ॥ नंदरायजी के परज
न्महें ॥ तातें प्रथम ग्वालकोप्रसाद दालिवाइये ॥ पाछें नंद
रायजी आरोगें ॥ पीछें जसोदाजी भीतर अंतः पुर में आ
रोगें ॥ पजीरी ॥ बूंदी ॥ पीरी फेनी ॥ पाछें बीरा दे ईझोत ॥ ४ ॥ क
रि ॥ पधराइये ॥ प्रथम जसोदाजीको पधराइ प्रभू पास

गादीपर विराजें ॥ पीछें नंदरायजीको आरोगाए दे ईझोत क
रि पधरायये ॥ चारि लालि हे तिनको रोहिनीजी अंतः पुर
में आरोगावतहे ॥ तिनकी षाडी स्वतहे रंगीन को रहे लाल
तिनको स्वेत फेनी बूंदी पंजीरी आरोगाइये ॥ जिनकी सा
ऊलाहे ॥ तिनको पीत फेनी आरोगाइये बूंदी आरोगाइ
ये ॥ ग्वाल चारको पंजीरी लाडू माव बूंदी आरोगावतहे ॥ पा
छें श्रीआरोगाइ सबको बीडा दे ॥ प्रथम श्रीयसोदाजीको
पधरायपालनांकी डोरहाथमें देतहे ॥ श्रीनंदरायजी
को पधरायपहराइये ॥ आजनंदरायके आनंद ॥ नंद
दीप करिके नचाइये ऊपर दही डार श्रीजसोदाजी केपी
छें षेल गाइ बूंक गादीपरबेगारिये ॥ पाछें चार गोपी
कोंपधराय चारोंके हाथमें थारी तामें कुंमकुं म अच्छ
त श्रीफल भेट वस्त्र होइ ॥ सो प्रभूको भेट करि वस्त्र उ
ढाय पाछें गोपीकुं मकुं मके थापा करतहे ॥ सुपारि
हरदी की गांठि दूबथारी परहे ॥ नंदरानीजी को कुंमकु
मकी वेंदी करि ॥ पाछें नंदरायजीको मांथेंतिलक करि

भाव. अब छठतलगाइदूधमाथेधरतहे ॥ षंभमेंधापादेलीला
१८ रहस्यनंदालयकोभीतरहंधापाबेकीए ॥ तिलककरिनंद
यपमेंअनुरागअपनोधापे ॥ तबभक्तनकोभावसोंनंद
पसोदाआदिसबकोप्रभुअंगीकारकीए ॥ पीतवोषासोंप्री
तसोंप्रभुबंधे ॥ इवहरी ॥ सोहरीसाडीचारेंधेरे ॥ तामेंयह
कहेतुमसदायहरसमेंहरिभरेरहो ॥ पाछेग्वालचारद
हीदूधकीकावरलेकेइनकोंपधराइये ॥ नंदरायजीगो
पीग्वालनांचिकेदूधडारतहे ॥ सोअसीसतेदूधंन्हाओ
पुत्रफलो ॥ पाछेदहीडारतहें ॥ सोगोरसमदाधरमेंभ
रेरहो ॥ पाछेमांखनउछालतहें ॥ मुखमेंलपटतहे ॥ सो
हृदयतेप्रेमरसउछलितभयो ॥ सोसगरेलोगनसों
गरेब्रजमेंफेल्यो ॥ पाछेबीचमेंचारोभक्तकोकरिनें
ग्वालकीतनियांसबनितेंकरतहें ॥ हाथजोरिमंडला
कारनाचतहें ॥ पीरादहीछांटतहें ॥ आजुनंदरायकेआ
नंद ॥ यहइकारएकवारकेनाचसोंगावतहें ॥ हमारेराप
घरढोटाजायो ॥ यहगायपाछेपालनागाइवेगके ॥

गोपकीतीनिपाकेमाथेंवस्त्रआभूषनबंधावतहे ॥ महा
भोगकीआरतीकरहेपलनापधारे पीछेंपलनांपरहोइ
करहेंसिंघासनपरहोइ ॥ पीछेपालनेमेंपधारे ॥ दधिको
दारसरूपइधश्रीस्वामिनीजी ॥ दहीश्रीचंद्रावलीजीह
रदीकुमारिका ॥ मांखनश्रीयमुनांजी ॥ चूंनारचडारतहे
सोसगरेभोगनकेनावतें ॥ याप्रकाररसकीकोचमचाइ
यहनावतहे ॥ आजतेंब्रजमेंरसकेपारपनारेंसदावहें
गे ॥ सपमलीपविदाहोइगायकुहनअर्पे ॥ पाछेगोपी
जनलोकजोतकरिविदाकरिए ॥ दहीमेंतेलचूंनोहरदीडा
रके ॥ हरदीमुख्यदहीआतिरूपा ॥ तेलमहारानीजी ॥ चूं
नोकुमारिका ॥ पीरोअनुरागतेलस्नेहदधिकोदोकरि
नंदरायजीहाथमेंजललेकधृतोकलेसंकल्पकरतहें ॥
अस्यश्रीकुमारस्यमात्रापित्रोसिसौख्यंवृद्धीर्थ पुत्रनांपेगो
दोनब्राम्हणायदातुमहेसमुत्सृजे ॥ ईब्राम्हणप्रोहितको
दीजे ॥ नारियरभेरवस्त्रगहनोसवनोमीकोसंकल्पआर
तीपीछेबाहिरनिकासिये ॥ मंगलाआरतीकरहेपाल

नापर॥मोतीकीहोइ॥कहुंसिंगासनपरपधराइकेहोइ
तेसेंहीमंगलाभोगपालेलनापरआवे॥कहुंसिंगास
नपरआवे॥मांखनमिश्रीस्वामिनीजीकेकुच॥स्त्रीभा
वमेंकुचपरमफलरूपहें॥परसप्रभुकरिकोमलमांष
नवतप्रभूकोलागतहें॥मिश्रीकीवुकनीअधरषंडन
मलाइश्रीस्वामिनीजीकोअधरामृत॥तामेंद्रवीभूत
श्रीयमुनाजीहें॥मिश्रीकोकरकरायहे॥सोकपोलषं
डनहें॥प्रभुकेकपोलमेंनषतथादंतलगेहें॥दहीहेसोश्री
चंद्रावलीजीकोकपोलगुदगुदोहे॥रसरूपआतेताप
मेंसङ्कोहोतहे॥सोकपोलमर्दनषंडनमेंसीतलकरहो
तहे॥ओंसनाइयहेसोश्रीस्वामिनीजीकोअधरा
मृतहें॥लालरंगवलकारीअनुरागसहितहेसोजाव
नीमाराजीहें॥तिनमेंकपूरश्रीचंद्रावलीजीकेअंग
गकोसुगंधहे॥गोरकोभावयूंनश्रीचंद्रावलीजीवसन
हेंश्रीस्वामिनीजीवूरा॥वासनीश्रीयमुनाजी॥पी
अमहरूपकुंमारिका॥पाप्रकारसंवारोकेभावतेंहे॥कपोल

रूप॥पूंदीकेलाडूश्रीस्वामिनीजीकेकुच॥सेवकेलाडूश्रीचं
द्रावलीजीकेकुच॥मागश्रीचंद्रावलीजीके[illegible]कपोल॥का
रीश्रीस्वामिनीजीश्रीयमुनाजीहाऊ॥रात्रकेमहाभोग
कीसामिग्रीभोगकीवेहें॥सोमंगलामेंअनुपानहें॥भो
गकीपाछेंओरप्रभूकोमनआतुरविरहहोतहें॥सोका
रीरूपश्रीस्वामिनीजीद्रवीभूतश्रीयमुनाजी॥फेरिअ
धरामृतपानकरायसीतलकरतहें॥पातेंअल्पेकभोग
मेंत्रपथमझारीभरतहें॥जवश्रीस्वामिनीजीसोंरमणा(?)
होतहें॥तवश्रीयमुनाजीअंतरभूतहें॥जवश्रीस्वामिनी
जीअंतरभूतहें॥पाप्रकारसगरेव्रजभक्तकेअंतरभूत
श्रीस्वामिनीजीकोंचर्वितश्रीचंद्रावलीजीआरोगावतहें॥
भोगपीछेंआचमनसोंश्रीचंद्रावलीजीकोअधरामृ
तपांन॥मुखवस्त्रश्रीस्वामिनीजीकोअंचलरूप॥आ
रतीकरतहें॥सोअपनपोवारतहें॥तामेंभेदसदारूपे
कीतथाभरपकीआरतीहोइ॥ऊपरकेखंडमेंश्रीचं
द्रावलीजीकुंमारिका॥घंटाआदिवाजेहें॥सोमतकन

भाव. केआभरनवाजतहे॥ वलकंकनलक्षुद्रघंटिकानेपुरादि
१९ वाजतहे॥ सोमंडलाकारभक्तनिर्तकरतहें॥ ऊपरकेषंडमें
एक दीवाहोइ॥ नीचेकेषंडमेंदीवाचार॥ तीसरेखंडमेंदीवा॥ ८॥
चोथेखंडमेंनीचेंदीवा॥ १६॥ सोनेकीथारीकीआरती
श्रीस्वामिनीजीकोमंडल॥ रूपेकीथारीसोश्रीचंद्रावली
जीकोमंडल॥ मोतीधरतहेंरंगभरतहें॥ सोआभर
नअंगराग॥ पंनामानिकपिरोजालसुनियांमूंगापु
खराजहीरामोती॥ नगजरितहारपहेंचीपदिकचोकी
वातीहेंसोभक्तनकेहृदयमेंभावअंकुरितविरहसो
आतिवर्तहे॥ यीस्मेहहेरंगअनुरागहे॥ याप्रकारतेंम
दिनमोतीकीआरतीउतारतहे॥ चूंनकेदीवाभक्तनके
श्रीचंद्रावलीजीकेहृदयस्वरूप॥ हरदीश्रीस्वामिनीजी
केअंगरूपपीरीप्रीतिरूप॥ रीवडाकोकुंमकुमलगाव
वतहे॥ सोअनुरागरूपदीवजाआगधरतहे॥ अष्टसषी
रूप॥ ललिता॥ १॥ विसाखा॥ २॥ चंद्रभगा॥ ३॥ संध्याव
लि॥ ४॥ तुंगभद्रा॥ ५॥ स्यामा॥ ६॥ भामा॥ ७॥ तुलसी

मंडलाकारहे॥ तिनमेंवातीद्वपदोय॥ श्रीजीभक्तकेहृदय
दीपतप्पाश्रीस्वामिनीजी॥ श्रीचंद्रावलीजी॥ मुगियाइ
दुरीपिढुरीवारतहेंसोवात्सल्यप्रीतिकेलीये॥ दुष्टदोष
निवारतहें॥ मुगियाचारचारोंजूथपतिनकेओरतें॥ पा
छेंनोछावरकरतहें कछूरोकडकछूवस्त्र॥ पाछेंआरसी
दिखाइये॥ तिहारोघरसुखसबसोंपहगावनमंदिरतें
निकसिवो॥ सोनकरिपालनोंपासकोसाजउगायकारी
जारिसिंहासनपरधारिते॥ प्रभुकोंगादीसुधांसिंहास
नपरपधराइये॥ मंगलाभोगधरिपेजोमंगला
भोगपालनेमेंआयेगेहोइतोमंगलाआरतीकीजे
सिंहासनपर॥ पालनेंडगायआरसीदिखाइयेसिं
गारवहीरहें॥ ओरनेंदालयमें॥ शृंगारनोमीकोहे॥
ताकेलीयेदसमीकोंहूंयहीश्रृंगाररहे॥ आभरन
कोनेंमनाहीं॥ वस्त्रकोनेंमहें॥ पाछेंगोपीवल्लभभो
ग॥ वैष्णवकेह्योसिंगारभोग॥ पाछेंराजभोगमेंनं
दरायजीघरश्रागत्रजोनिउत्सवमानिये॥ पुरुषोत्त

भाव. मस्तु नंदगृहे जात: इत्यादि वाक्य हें ॥ तातें राजभोग में से
व ॥ घटा छक के वड़ा ॥ मीगे साक ॥ तीन कूंडा ॥ मनोहर लड़ुवा सी
२० रा ॥ पाछें नोमी के दिन सिज्या भोग हू नों धरिये ॥ अष्टमी की
रात को पाछें वल्लभकुल की भेट का दिवे अवसो मालि महा
प्रसाद लीजे ॥ नित्य पालनों न फूले तो पंद्रह दिन दूसरे उ
त्सव तांई अमावस्य फूलें दसमी कों पहीं श्रृंगार ॥ एकादसी
तें दूसरो श्रृंगार रखले ॥ बाललीला के कीर्तन गाइये ॥ नोमी
कों सेन संझा समय वेगी होइ ॥ भोग संझा को समय तक
होइ ॥ दसमी कों मंगला अवेरी होइ ॥ भाद्रपद सुदि छठि
मी दूसरो उत्सव ॥ अष्टकला चंद्र हें ॥ अष्टसाखि के मुखि
पा ॥ छट्ठ को श्रुतिरूपा को ॥ तातें अन्य अंग संग … हित
हें ॥ सोरीधक्र को ललिता कों ॥ पंचमी को विसाखा को ॥
सतमी को चंद्रभगा को ॥ द्वादसी रविवार को श्री यमुना
जी को ॥ या प्रकार सगरी सखी ॥ श्री स्वामिनी जी के आ
स पास प्रगट हें ॥ अष्टमी को अन्यंग प्रभु को श्री स्वामि
नी जी प्रगट विराजत होइ तो दूध सों स्नान ॥ का हेतें इनको

प्रागट्य पुरुषोत्तम सों रमन करनार्थ सिध्यार्थ हें ॥ पट्दोऊ स्व
रूपस्थ आनंद मात्र कर पाद मुखोदरादि अहर्निस लीला में
मग्न हें ॥ श्रीठाकुरजी के दोय वर्स पहिलें प्रागट्य … हें ॥ सो
प्रभु बिनां नेत्र खोलें नांहीं ॥ तातें वृखभानजी उच्छव मानें
नांही ॥ जब … अष्टमी आई ॥ तब श्रीठाकुरजी प्रगट ये ॥ तब
श्रीनंदरायजी ने जन्म को बडोई उत्सव मान्यो ॥ वृखभा
नजी आदि सब न को बुलाये ॥ तब वृखभानजी सगरो प
रिकर लेके नंदालय में आए ॥ तब कीरतजी हू बेटी को लेके
आई ॥ तब श्री स्वामिनीजी ने नेत्र खोलि के प्रभु को दर्सन
कीए ॥ तब वृखभानजी कीरतजी बहुत प्रसन्न होइ के कहे
यह कन्या तुम्हारे पुत्र को विवाहोंगी ॥ अब आज के पंद्रह
दिन पीछे कन्या को जन्म दिन आवेगो ॥ तब हम उत्सव
मानेंगे ॥ तुम पुत्र को लेके ॥ तुम्हारे पास रावल हे ॥ तहां
कीरतजी को पीहर हे ॥ तहां ही उत्सव करेंगे ॥ तब ता दिन
तें नंदरायजी की कानि वृखभानजी बहुत करते ॥ बरसा
ने के पास नंदरायजी को गाम बदी रहे ॥ या प्रकार नंदरा

भाव० यजीकेह्यांजनमाष्टमीकोउत्सवकरिकें पाछेंरावल
२१ मेंव्रखभांनजीकोसुसराहे॥ तहांश्रीस्वामिनीजीप्रग
टीहुती॥ तहांसगरेउत्सवकोप्रकारसिधभयो॥ तबराधा
अष्टमीकोनंदरायजीआदिसगरेगोपनकोंबुलायेहें॥
तबजसोदाजी॥ ठाकुरजीकोजन्मदिनकोश्रृंगारधरा
ये॥ श्रृंगारकरताश्रीचंद्रावलीजी॥ औरकुमारिकाहें॥
सोइनकोंध्यांनहें॥ वपुष्टिभक्तिहेंवारासिहें॥ तातेंपह
प्र जानतहें॥ प्रभूको[illegible]सुधाकोहे॥ श्रीस्वामिनी
जीकोभागरसुधाधारकोहे॥ इनकेपीछेंसबकोरस
कीप्राप्तिहें॥ तातेंकेसरीवागाकुलहकोश्रृंगारकीये॥ पा
छेंसगरेपरिकरसहितजसोदाजीपुत्रकोंलेपाल
आऐ॥ तबकीरतनेंअपनीकन्यांपासपालनेमेंकू
कोंपाढाऐ॥ पाछेंदूधसोंन्हवावतहें॥ यहश्रीव्रखभा
नजीकेह्यांप्रागट्यअन्नरूनउदयहे॥ तातेंओरमुख्यरू
पकोप्रागट्यश्रीवृंदावनकेभीतरमध्यांनसमयहें॥ सो
प्रभूसोंपंद्रहदिनछोटेहें॥ तिनकोदर्सनव्रजमेंकाहू

कोंनाहीं॥ उहांकीलीलामन[illegible]वांनीकोंअगोचरहे॥ सो
भक्तिरूपाकुमारिकाकोभावसहितध्यांनहें॥ तातेंतिलक
नेट[illegible]मध्यांनसमयराजभोगपीछेंकरतहें॥ उनहींको
दूसरोस्वरूपव्रखभांनजीकेह्यांप्रगटेहें॥ इष्धसबरसन
मेंमुख्यहें॥ [illegible]स्वरूपइच्छीभतहें॥ निलराकाकर्ता॥ पाछें
केसरीसाडीवृंदावनवारीकेश्रृंगाररूप॥ औरस्यांमचोली
सा[illegible] हृदयअस्थितहें॥ जहांप्रगटस्वामिनीजीनहीं
इतहां[illegible]करिकेंदर्पनमेंध्यानकरतहें॥ कहूंजन्माष्ट
मीकोंस्वेतकुलह॥ तहांभक्तिरूपाकेभावतें॥ तिनहूंकेह्यां
दूसरेउत्सवकोंकेसरीधरतहें॥ कहूंराजभोगपीछेंतिल
क॥ कहूंराजभोगपहिलेंतिलक॥ जन्माष्टमीकोपीतांबर
ओढतहें॥ दोऊस्वरूपएकरसहें॥ तातेंगोपीवल्लभमें
मांखनमिश्रीपीरेभात॥ वडीमिरचकोसाक॥ मेदाकीपू
री॥ भुज्योसाक॥ सध्यांनों॥ दही॥ खीर॥ औसाइसेव॥ वूं
दी॥ मांग॥ राजभोगमें॥ षायोभात॥ दहीभातमानिका
कीषीर॥ सेव॥ तीनकूंडा॥ मीगसाक॥ छाछकेवडा॥ पंजी

भाव. दीकेलडुवा॥गेंदुआ॥बूंदी॥सेवकेलड्डूआमेवाती॥बूंदीके स
२२ करपारा॥इत्यादि॥आगसांमिश्रीजन्माष्टमीकीनोंसी॥
पाछेंआचमनबीरी॥पाछेंरूपेकेथारमेंकुंमकुंमकोसा
थियाकरिये॥तामेंचूनकेदीवलाधरिये॥मुगियाबारह
पेयाएकधरिये॥दाऊकोंतिलककरिये॥दाऊकोंअष्ट
तलगायवीजदाऊकोआरधारमुगियाबारआरतीकरि
प॥डउत्सकरिये॥सीजननेंएकरें॥जोहमारेसगरेजूथ
केअधिपतिप्रगटभईं॥अवअपनोंकोइनकारानिंद
नोंतनरसकीप्राप्तिहोइगी॥तातेंएकतिरूपाकुंमारिकाआ
दिसगरीस्वामिनीनेंएकरतहैं॥सखीहूललितादिसाधन
आदिअपनीस्वामिनीकरतप्रगटीहैं॥तातेंसगरी
दिरमेंहरदीकोचोकसगरोव्रजहरोभयोरसहूव॥द्वव
मानजीहूनेंउत्सवकीयो॥एकजनमकोएकनेंव्रतपाले
पहइनोंनयो॥तातेंगायेहैं॥जोसुखनंदभवनमेंउपज्यो
तातेंइनोंहोतरीहै॥तथाएकतिरूपाकुंमारिकावृंदावन
मेंप्रागट्यजनयोसोउत्सवआरहुखभानजीकेघरप्रा

गट्यपहदाऊउत्सवमानेवृंदावनमेंप्रागट्यतरनरूपर
नित्यलीलाकरनार्थ॥तहांजापवेकीगंम्यनाहीं॥तातें
दाऊउत्सवव्रषभानजीकेघरसगरीस्वामिनीमानें॥ता
तेंइनोंसुखसूरदासजीगाये॥पाछेंदूसरेदिनपहीअ
गारकें॥२॥सागाडीब्याहकेगाइयें॥भादोंसुदि॥११॥ता
होदिनजोएकादसीहोइतोमुकरधरकेंसरीवस्त्रध
रें॥नहीदूसरेदिनधरें॥अथरंगहोइएकादसीकोजो
उत्सवएकादसीकोन्यारोहोइतोदोनएकादसीकोंअम
गनहीं॥पहदोनएकादसीदोनकेमुखियाश्रीचंद्राव
लीजीहैं॥तातेंइनकेभावतेंउद्दीपनभावहास्यकदास
करिनेकुंजलीलासिधीकरतहैं॥इधश्रीस्वामिनीजी
कोअधरामृत॥दहीश्रीचंद्रावलीजीकोअधरामृत
प्रभुदानकेमिसमांगतहैं॥वेनुदारांगापनमेंसुधा
कोस्थानहै॥सोहूधदहीमेंआयोसोभक्तद्वारास
गरीस्वामिनीसोंलेतहैं॥जन्माष्टमीपीछेंराधाअ
ष्टमीराधाअष्टमीपीछेंदोनयातें॥नित्यासिधो

भाव. २३

वारेंभक्तप्रथममध्यतिरूपाकोसिपावतहैं॥ पाप्रकारप्रथ
कोसबदेह॥ पातेंएकादसीकोंभईजोनोंधाभक्तिमध्य
महती॥ पाछेंनित्यसिधास्वामिनीजीश्रीयमुनाजीआ
पनोभावधरेंसेयागत्सतिनपोगरसततातेंरोहराधेंध्यै
रसकोलीलामेंअंगीकारभयो॥ तातेंएकादसीकोफला
हारदूधदहीमुख्यउत्सवप्रगटकीए॥ तातेंश्रीगुसांईजीआ
पनेंघरमेंमुख्यएकादसीकोउत्सवश्रीनवनीतप्रियजी
केह्याराखें॥ फलाहाररहेंआरोगें॥ औरश्रीआचार्यजीनि
त्यलीलावारेहें॥ तातेंअपनेंठाकुरश्रीजीपासफलाहा
रनांहीहें॥ पहभावतें॥ एकादसीकोउत्सवहे॥ औरहेंस
संबंधकीआज्ञारसकीउत्पतिहेंग्यारसकोहे॥ तातेंया
रसहेंरसरूपहें॥ सोहेंव्रजभक्तनसोंरसकरातहें॥ मुकुट
कोप्रथमशृंगारहे॥ जन्मभएपाछेंउद्योधकोमोरक
लाकेये॥ नवरसरेंहें॥ सामुकुटधाररसरोनकेंपे॥ त
थामुकुटभक्तनकेनेत्ररूपहें॥ स्यामताहेसोअंजनहें॥ ऊ
परछोगाहें सोवरुनीहें॥ मोरपक्षकलाक[illegible]रतहें॥

औरसास्त्रमेंसोरेंकला॥ औरचोंसठकलाकहेहें॥ ताह
तेंअधिककीजितनीव्रजकीस्वामिनीहें॥ तितनीकलाकरि
अपारसवकोदोनकरतहें॥ पीतांवरधरतहें॥ सोमुख्य
स्वामिनीकेअंगमेंलपटिरहेहें॥ तातेंशृंगारनित्यश्री
स्वामिनीजीकरतहें॥ तातेंचोटीअनवटविछिपास
कोधरतहें॥ तानिपोनिजस्थान॥ लालसूथनह[illegible]को
हरीसोहारीपीतइजारकोंस्यामसोहारी॥ पाप्रकारचोली
कीबाहलसहें॥ सूथनकेऊपरकोघेरभक्तनकेहृदयरू
प॥ काछनीभक्तनकेलहंगा॥ तथासाडीकोचुनावअहो
रूढीबांधतहें॥ काछनीरोडरंगकीतीनरंगकीचाररंग
कीपांचरंगकी॥ तामेंदोयरंगकोवहुतधरेंनित्यसिधा
केभावतें॥ तीसरेस्फुटितसखाचोथेकुंमारिका॥ पांचयेमें
सगरेंव्रजकीस्वामिनी॥ गादीजामेंमोरतहें॥ ऊपरसोहृ
दयरूप॥ तापरकदिलगायपबांधतहें॥ काछिनीमेंकि
नारीहें॥ सोभक्तनकेलंहगामेंसाडीमेंलागीहें॥ कुंडल
मकराकृतहें॥ मोराकृतहें॥ वेसरचिवुकऊपर॥ लटकन

भाव. कंठमालावेंदी॥ पदिकहार॥ मणिमाला॥ वैजंती माला
२४ बाजूवंद॥ कंकन॥ पहुंची॥ जव॥ रतनचोक॥ क्षुद्रघंटिका
मुद्रिका किंकिनी नूपुर॥ गुंजा नेत्रांजन॥ तांबूल॥ इत्यादि
भक्तनके भावसों मानि माला है॥ सो भक्तनके नामकी मा
ला है॥ गोपनकी गननां मिस भक्तनके नाम लेत है॥ गुंजा
है सो भक्तनके नेत्ररूप है॥ विहार समय नेत्र लाल होत है॥
स्याम पूतरी है॥ स्वेत गुंजा श्री चंद्रावलीजी के भावतें॥ क
छु आभूषन न होइ तो गुंजा पहिराइये॥ तव सगरे भ
क्तनके मंडल में भ्रम प्रसन्न होइ विराजें॥ यही भाव पिछ
कामें हे मोर मोरनी वत॥ वैजंती माला पांच प्रकार के र
लकी तथा पांच प्रकार के फूलनकी॥ चतुर्थ भक्त रूप
सखी सहचरी॥ सघन माला में तुलसी पात सब फूलसों
चरन पर्यंत॥ कंठमें स्वामिनी॥ कटि में श्री चंद्रावली॥ गो
त्रिमें श्री यमुनाजी॥ चरण पर कुमारिका दास भाव॥ स
गरे ब्रज भक्त अंग अंग में लपटि रहे हैं॥ वेनु श्री स्वामिनी
जी रूप॥ वेत्र श्री चंद्रावलीजी रूप॥ दान में आडे रोकनके

अर्थ॥ राजभोग में मुख्य दही होइ॥ सेव॥ तीन कूडा॥ छा
छके वडा॥ भीगे साक॥ रिसे रातें श्री चंद्रावलीजी॥ अ
पने मनोरथ की सामग्री करि गोप भायी है॥ दही चचन अ
पने अपने निकुंज में लेके आवत भई॥ आभरन वीडा मा
ला अगरा सिगरी सामग्री एकरा मेलें बरसाने तें श्री
स्वामिनीजी कोले॥ सुधो बिलछ्वन मोगिरराज पर आ
ये॥ श्री गोवरधनधर अपने अंतरंग सखा लेदान
घाटी में रोके॥ कबहूं सांकरी खोर में रोके॥ डेगरी के मि
स ऊंडही पनकरिके पाछें निज मंदिर तथा कुंज में वि
हार करत हैं॥ सो श्री गुसांईजी विस्तार करिके दान
लीला में वर्णन कीये हैं॥ राजभोग पीछें माणती की
आरती श्री चंद्रावलीजी अपनो विरह वारत हैं॥ न्यों
छावर करत हैं॥ भादो सुदि द्वादसी॥ १२॥ वामन द्वादसी
को॥ अभ्यंग धोती उपरनां कुलह केसरी॥ कटि में प
ला क्षुद्रघंटिका को अवतार॥ भूमि स्पर्श कटि ता
में आभरन कम रूपक में भूमि पर होइ॥ याही तें कि

भाव- पासतकबरननकोविस्तारकीते॥ पुष्टिमार्गमेंयासोउत्स
२५ वमाननतहें॥ विष्णुपंचकव्रतवैष्णवकोंकरनो॥ एकएका
दसीवरसादिनकीसव॥ चारजयंतीभक्तउद्धारकहें॥ गो
विंदंपरमानंदमाधवंमदसूदनं॥ एकानैवविजानातीपा
तीहत्यव्रत॥ स्मृति॥१॥ विष्णुपंचकमित्येवव्रतंसर्वाघना
सनं॥ नित्यंनैमित्तकंकाम्यंविष्णुपंचकमेवहि॥२॥
तत्याज्यंसर्वथाप्राज्ञैरनित्यंसर्वपापव्रताति॥ मुद्राधा
रनबिनापूजानिष्फलकहेंसोउद्यासेवाहें॥ प्रभुकोसर्व
पहेंरिक्करें॥ प्रभुवेगेहोइतोरवा तिलकलगायआप
करेंपूजामेंसमयथोरोंबाद्विनहोइ॥ सेवामेंकालोप क
त्रिकालेंपा त्रिकालेपातेंजितनीसेवा तितनी
हींकरेंअधिकनाहीं॥ स्नानैतिलकभगवद्
न्यारेंकरें॥ वर्तुलं॥ तिर्यग्छिद्रंह्रस्वंदीर्घंततरंततुविकृवि
द्वा रूपंवर्श्मायोभिन्नमूलंपदच्युतं॥४॥ त्रिपुंड्रविनाछिद्र अ
छोटोमोटोबडोनासिकालोंपतरीलकीटेढोविरूपऊ
जरोकाफरमाटीको॥ एकलकीरखडीएकछोटी॥ वहो

तजीनोंकोराऊपरतेंबध्योहोऊनोंहसोंमिल्यो॥ नीचेविनो
बध्यो॥ ऐसेंनकरिषट्मुद्रासेवाहीमेंसंप्रदायमुद्राजव
मनहोइतवहींधरें॥ मालातुलसीकीसुधिकाष्टकरंकन्ना
दिजामेंअवतारदेवताकोवासनाहीं॥ कमलगट्टामेंब्रह्मा
लक्ष्मीदोएकोनिवास॥ तातेंपुष्टमार्गीयकेंकामनआ
वें॥ रुद्राक्षकोछुरीकेंन्हानोंपडेकद्योमइहे॥ ऐसे
पहरिजाइ॥ एकादसीकोविष्णुशृंखलयोगहोइतोएका
दसीकोव्रतहोइ॥ द्वादसीउत्सवसंगहोइ॥ न्यारोहोइतो
थालीऊपरनाकेसरीफुलहें॥ राजभोगमेंसेवक्षकछके
केजा॥ मीगासाकं॥ तीनकूजा॥ राजभोगपीछेंसंगा
सनआगेकोरीहरदीकोचोकपूरि॥ पंचामृततासिध
करिपरातपरसाथियाकुंमकुमकोकरिचोकीपर
वस्त्रविछायपसालिग्रामतथागिरराजजीकोंपधरा
इयेजललेसंकल्पकरिये॥ भगवतः श्रीपुरुषोत्तमस्य
वामनस्यप्रादुर्भावोत्सवंकर्तुं तदंगत्वेन पंचामृतस्ना
नंकरिष्ये॥१॥ दूसरेघरश्रीगोकुलनाथजीकेहां॥म

भाग· २६

इथैकरितस्यपुरुषोतमस्यवामनावतारप्राडुर्भावोत्स
वेकर्तुं पंचामृतस्नानंकरिष्ये ॥ यहकहिजलअछ
तखोडितिलकअछतसालिग्रामकोंकरि ॥ तुरसीच
रनपरपंचामृतमेंमहामंत्रसोंधरिन्हवाइये ॥ दूधद
हीघीबूरासहत ॥ पीछेंएकसंषइधएकसंषसीतलज
लपीछेकेसरसोंहाथमेंलेकेंन्हवाइवभूषासवेगारि
पीतांवरदोऊगरउदायतिलककरिमालापहिरायकें
सरअबीरगुलालचोवासोंषिलाइये ॥ काहूमंदिरमें
वसंतनांहीषेलेंउत्सवकोभोगआवे ॥ सषडीमेंदहीना
तसेव ॥ अनसषडीमेंपनासकरपारापनांफलाहार
मम्री ॥ पाछेंमोतीकेपिछआरतीकीजे ॥ वडेघरउतकेंहू
फलाहारकहूंमहाप्रसाद ॥ जेसीवडेकीरीतहोयतेसेंहा
कीजे ॥ मथुरेसजीकेघरमेंश्रीगोपीनाथजीकोउत्सव
भांद्रवासुदि ॥ १४ ॥ जन्माष्टमीकोसिंगारसेसीरा
पसोंमिश्रीहोइ ॥ भांद्रवासुदिपून्योतेंसांझीदिनपंद्रह
तांई ॥ पहलीलाडवरसानेकीहें ॥ साश्रीठाकुरजीसखी

रूपकरिकेंआवतहें ॥ जुगलस्वरूपविनांश्रीस्वामिनीजी
सांझीनांहींपूजतहें ॥ इहांनंदगोपकुमारिकानंदरायजी
केघरसांझीधरतहें ॥ तहांश्रीस्वामिनीजीश्रीचंद्रावली
जीआवतहें ॥ तहांश्रीठाकुरजीकोसषीरूपनांहींधरनो
परतहें ॥ काहेतेंबालभावसोंसवनकेसंगपूजतहें ॥ दि
न ॥ १६ ॥ कोमलहे ॥ वारोंनित्यसिधांनकेभावतें ॥ सां
झीमेंकीकाजरकेसरिकुंमकुंमगुलालअबीरचो
वाचंदनअक्षतकुंमकुंमहरदीअनेकफूलअष्टदेवी
कोदीपदानपरदिनपूजतहें ॥ देवीश्रीयमुनाजीरूपहें ॥ ता
तेंसांझीकोभावगोप्यहे ॥ तातेंसांझीआरतीथारमें
धरतहें ॥ चोदसकेदिनकोटकीवडीआरतीहोतहे ॥ सग
रेव्रजकोअंगीकारहें ॥ धूपदीपनेवेद्यबूरावतासा ॥ पा
छेंअमावसकोकहूंकोटकरेंतोपरिवाकोंश्रीयमुनाजी
मेंपधरावें ॥ चोदसकोंकोटकरेंतोअमावसकोसांझको
पधरावें ॥ नवरात्रिकेनवपर्वतामेंपहिलोदिनआंग
वागालालछापेदारगरमीहोइतोघुलेवंदसीतहोइतो

आश्विनसुदी १

वंधवंद ॥ राजभोगमेंसीरासामिग्री मुख्य ॥ काहू मंदिरमें
भाव. पहरीतहे ॥ पहिलेदिनछोटेभोग ॥ १ ॥ फेनी ॥ २ ॥ पीरबाव
२७ र ॥ ३ ॥ कपूरनाडी ॥ ४ ॥ सबोरी ॥ ५ ॥ गेरूा ॥ ६ ॥ मेवाती ॥ ७ ॥ प
पची ॥ ८ ॥ जलेबी ॥ ९ ॥ काहू मंदिरमेंफिरतीजोमनआवे
सोराजभोगमेंकरे ॥ पहिलेदिनसीराआवश्य ॥ काहूमें
दिरमेंपर्वकेपदमेंसामिग्री कहेहेंसोगावतहे ॥ साउसा
मिग्रीधरतहे ॥ कुलहलालतपाहरी नवदिनकोनो
सामिग्रीनोधाभक्तकेभावसों ॥ परिषाकेंजोबावने ॥ सो
पात्रमेंन्यारेन्यारेनोदिनसाधनकरिदसमीकोनिर्गुणके
भावमेंमिलेगी ॥ व्रजकीस्वीश्रीचंद्रावलीजी ॥ श्रीय
मुनाजीकिस्वरूपहें ॥ तातेस्वीकेमिसद्धनके[illegible]मेरा[illegible]
हें ॥ आश्विनसुदी ॥ १० ॥ विजेदसमी ॥ [illegible]भोग ॥ चोराको
स्वोवीतथावसमोकोवागा ॥ कहूंजरीकोकुलहसुपेद
तथास्वेतवस्त्रपरस्वेतगोटा ॥ राजभोगमेंसेव ॥ खाध
कवजा ॥ तीनकूडा ॥ मीगसाक ॥ बीरवडा ॥ रवा ॥ आरति
त्पकोनेग ॥ तिवारीमेंचोकमेंपडीकेचोकपरनो ॥ पडी

कूदसकोग ॥ चोकमेंकरि तिनमेंगोवरकेदस पूवाधरिये ॥
एकएक पूवापरसेंदुरके पांचपांच टपकाकरिये ऊपरसब
केपीरछ्रधकतडारिये ॥ प्रथ्ह कोजवाराधराय भोगकेस
मयपीछेडन दसो पूवानपरडारिये ॥ सोभोगकेसमय
चौकि[illegible]पडीकरिदसजवकेअंकुरतामेंमेंमलगापति
[illegible]केकी[illegible]जवाराधराइये ॥ मुगिपावारिचूंनकीआर
ती[illegible]रिये ॥ दसपूवानपरजवडारि ॥ पाछेउत्सवको भोग
[illegible]समोन धरि ॥ बाहरजाइयोजाएजीपे ॥ कहूंपोजाए
जि[illegible]सबभोगसेंजा भोगसेंनभोगसंगहीधरतहें ॥ तथा
रात्रिकोसैया मंदिरमेंजवारावूंदीकेलडुआसवके
लडुवा मोन धरतहें ॥ धुजाश्रीगोवरधनके उहांनबैहें
३ ॥ प्रसिधपहेहेजोश्रीगोकुलजी तेंसातोंपालकीश्री
गोवरधनपूजाको चलतहें ॥ दसहरातेंगनेदरायजीके
उहांव्रजवासीनकेघरअंनकूटकीसामिग्रीगोवर्द्धनली
लाकेगीतगावतेंफिरतहें ॥ रासकोउत्सवतरहटीहोइय
हेउत्सवआदिश्रीवृंदावनकोहे ॥ आकासदीवादसह

भाव. रातेंकार्तिकसुदिपून्योंतांई॥ जो धाराधरतीसमयक
२८ यरीतरवारपासरहें॥ गोवरधनमेंनेत्यासेंधांकीसबी
रहतहें॥ सोफलसलेंआगेंआवतहें॥ डारपरपालको
आवें॥ तबवेरमंत्रसोंस्वस्तिवचनपढापआंवाकेपात
तें॥ पालकीपरजलछांटतहेंमार्गतेंआएतातेंआर
तीकरिपनांभोगधरतहें॥ आपनेंआपनेंमंदिरमेंवह
वेटीचरनछूवतहें॥ भलीभईआपपधारेंहें॥ इसहू
वागोवरकेकरतहें॥ ताकोभाव॥ जबसेंह्मप्रथीकों
पाये॥ तबआंखिअंकुरितभई॥ तेसेंईइसप्रकारकेना
वकोंस्थापितकीये॥ सेंदूरलगावतसोंपूजनकीये॥
सिंदूरश्रीस्वामिनीजी॥ अक्षतश्रीचंद्रावलीजी॥ ऐसे
इस्वरूपकोंअनुरागसगरेभक्तनपरदरसाये॥ तवभाव
सबकोंअंकुरितहोतभयो॥ प्रासिधपरहें॥ श्रीठाकुर
जीविजपकरिआए॥ राजभोगवेकोंदिनहें॥ परंतु
यहपुष्टिमारगमेंव्रजभक्तनकीक्रियामेंसंजैवेनां
हीं॥ नोधाभक्तनोदिनकेमनोरथकरिस्वोंदिनप्रेम

श्र
लहूनांभक्तिसवींपरतिनमेंलिकेंइसमांभोगधरतहें
प्रथमसमागमकोदिनहें॥ रागकान्हरो॥ सुनगमहूरत
विजेइसमीकोप्रथमसमागमप्रियाहुलास॥ दूतीवि
नतीकरतप्यारीसोंवेगिपधारोपिवकेपास॥ १॥ मंज
नकरिआभूखनधारोकनकअंगपरइचीरसुवास
॥ २॥ धीरधरोहरखमोननेंइनीपूरनकरिप्रीतमकीआ
स॥ नेवनागरिसंगमनवनागरनवसंगमवरनतहि
रिदास॥ जीवछत्रपरदरजप्रतापतेंनिल्पनवलताहुद
यप्रकास॥ ३॥ मांगइसोंकेमुखारबिंदस्वेइरूप॥ तिन
कोरसप्रगलेतहें॥ जबकोंअंकुरधरतहें॥ सोजबको
चिंन्हश्रीस्वामिनीजीकेचरणमेंहें॥ तातेंअंकुरधरि
इंनताकरिमोनमोचनकरतहें॥ वसमांकोवागाजरी
कीकुलह॥ श्रीचंद्रावलीजीकेमनोरथतें॥ रागसारंग॥
विजयइसमीपरमसुहांई गोधनअग्रवारीपाय
गाई॥ गोपसकलवेअपांईकुसलमनोवहुंसु
भरिनभाई॥ १॥ व्रजरांनीव्रजराजकुंवरकोंकीरत

रहस· ललितामोतिवुलाई॥आजुहमारिवजेपरवहे॥तुम
२९ सवजेंवनवेगेआरी॥२॥करिसिंगारगिरिधरनचं
दकोतेलफुलेलसरससुखदाय॥सूथनपीतस्वेत
वोधारिलाल॥पागासिरपरथहराय॥३॥काजरआं
जिमोहमइकारेअनतारतअरुलेतवलाय॥रासि
कप्रीतमअनुविजयकियोहरवमोनकुंमारजहांम
नभाय॥४॥इत्यादिभाव॥रासपूंन्यो॥पहउत्सवतो
पुष्टिमारगकोपरमफलरूपहे॥अष्टभगवतस्वरूप
॥षोडसनत्क॥याप्रकारकेअनेकमंडलअलौकिक
चंद्रलौकिकचंद्रमेंनिवेस॥मध्यआकासतांही॥उ
उराजतचंद्रकोगमनतहांतांईदोयदोयएकएक
कप्रभु॥कहूंषोडसअष्टप्रभुअन्य[illegible]त्रीदस
सोकचंद्रमाकीलीलागीतगोविंदवारी[illegible]
दकीतहांजितनेंभक्ततितनेप्रभु॥पहअलौकिक
रात्रिकुंमारिकाकोचीरहरनमेंदिषाएहुतेसोप्रग
टकीएअतिरूपाकोव्यापिवैकुंठमेंदिखाएहुते॥१

अतिरूपासाधनविरहकरिकेंसिधहोइरहीहे॥कुमा
रिकाकोंअलौकिकसाधनकात्यायनीपूजनकरि
सिधभई॥पहउत्सवमेंरात्रिकीपूंन्योलेंनी॥तातेंनि
त्यलीलामेंप्रमाननांही॥जवहीइछाहोइतवहीउजरा
तपछमांप्रगटहोइ॥ताहीतेंश्रीगोवरधनधरकुंजके
वीचमेंरहेहें॥पीछेंभीतासिंहासननांहीचहूंदिस
मनोहे॥हस्तकेचोकरिनृत्यकरतहे॥गिरराजधरे
होइतोपांकेअंगुरीडगे॥यातेरासहे॥तातेंपांचोंअंगु
रीउत्तएहे॥अतिरूपाकुंमारिकाकोरसदानकेअर्थे
पहपूंन्योकोउत्सव॥अन्यंगनांही॥दानएकादसी
मेंनांही॥पहदोऊउत्सवनित्यलीलाकेहे॥कहूंअ
न्यंगहोतहे॥केसरिश्रीस्वामिनीजी॥मुकटडांकको
तथाहीराको॥तथामोतीको॥मुकटकेवीचचंद्रिकात
थावेजे॥नगसोश्रीस्वामिनीजीचोरोंओरमंडलन
कहे॥काछनीसाडीकाचुंनावतथालहंगाकोघेर॥
सूथनचोलीकीवांहकुंडलउंछलितरस॥मनिमा

रास॰ लाभक्तनकेनामकी॥मोतीमालाश्रीचंद्रावलीजी॥प
३० दिकचोकीश्रीस्वामिनीजीहृदयमेंबेठीहें॥धुकधुकीकु
मारिकावनमालासगरेभक्तनकेभावसों॥पीतांवर
रूपश्रीस्वामिनीजीअंगसोंअंगवेष्टितहें॥तथास्वा
मिनीजीकीउत्तरीसाडीहें॥ पीतांवरकोअंचलफरक
तहें॥सोश्रीयमुनांजी॥गुंजाभक्तनकेनेत्ररूप॥वेनु
श्रीचंद्रावलीजीरूप॥ वेनुमेंरसश्रीस्वामिनीजीको॰
अधरामृतरूप॥ वेत्रहेंश्रीचंद्रावलीजीरूप॥दांनली
लामेंसहायरूप॥वेनुरासलीलारूप॥ मुकुटकाछ
पीश्रीस्वामिनीजीकीटाकीरूप॥गोपीपासकालपी
तांवरनीवेंबोधतहें॥श्रीस्वामिनीजीकी रूप॥रा
जभोगमेंसेव॥ध्वाधकेवडा॥उपरेना॥ पूरीमेंदाखी
॥पाछेसेंधपाआरतीपीछेसिंगारवडोमनोरइ॥सेनो
गआवें॥तवचांदनीकोसाजसिधकरिये॥मंदिरके
वाहिरातिवारीभांकिरूंडीकीतहविछेऊपरसुपेदचा
दरविछाइये॥तापरसिंहासनधरिसूपेदचंदोवा

सुपेददिवालगिरी॥तथासुपेदपिछवाइसवसुपेद
साज॥ षंडपाटनहीहोऊआरतीकिया॥षिलोनानकी
तरकडीदोऊआरधारिये॥वामहिंसासेज्यातिढ्वाय
तहांसामिग्रीधरिये॥मगदकेलाडू॥कुमारिका॥चो
रीगाश्रीचंद्रावलीजी॥वेसनश्रीस्वामिनीजी॥घीश्री
स्वामिनीजीकोभाहसवभक्तनकेहृदयमेंआवे॥तव
प्रभुभोजनकरें॥चासनीश्रीयमुनांजी॥चोपडमांडि
दोऊआरगाद्दीतकियापासआरसीधरिये॥ख
तफेनी॥दही॥वराहहरोरी॥चंद्रकला॥उपरेना॥स
वोरी॥मेदाकीपूरी॥वासोंदी॥दहीवरा॥मांखनवरा॥मां
खनमिश्री॥षाजा॥दूध॥षोआ॥षोआफेलडुवा
मेवा॥तरमेवा॥निल्पकेबीडाधरिये॥तातेंदूनोध
रिये॥ पेलायचीकुमारिका॥वादांमपिस्ताअंजत
हें॥महारांनीजीविरहमेंपरपकूकरतहें॥प्रभुजोयप
होतहें॥मिस्रसीतकारकपरश्रीचंद्रावलीजीकेश्री
अंगकोसुगंध॥अतरश्रीस्वामिनीजीकेअंगकोसु

गंध॥ निज मंदिर में जगमोहन में चोक में साथिया कर
रास तहें मंडलाकार॥ ता में गुलाल भरत हें॥ व्रज भूमि अ
३१ नुरागरूप॥ हरदी चोरी गा को चून पूरत हें॥ ता पर प्र
भू को सिंहासन धरि पधरावत हें॥ हरदी स्वामिनीजी
गुलाल कुं मारिका॥ चोरी ग श्री चंद्रावलीजी लहर वे
ल श्री यमुनाजी॥ जब प्रभू पर उजियारी आवे॥ तब
आरती करि प्रभू को सेज्या में पोढावे॥ सेज्या पास
मुकट काछनी सगरो साज धराव में धरिये॥ स्वामि
नीजी को श्रृंगार मंदा को साज सैया पास धरत हें॥
गुलाल अबीर चोवा अरगजा केसर के घसें कटोरा
पास धरत हें॥ लेंहगा लूगरी चोली आभरन
तहां वसंत खिलावत हें॥ मंगला आरती पर्यंत ता
साज रहे॥ श्री वृंदावन तीन प्रकार को हे॥ जा को जे सो
भावत सो फल॥ आधिदैविक तो व्रज भक्तन के हृद
यरूप॥ ता में गिरराज पर्वत कागिनकुंज रूप॥ उदरनां
भिवत् को मल कंदरा पुष्प पता की सैया॥ रोमा

वली वन की लता रूप भक्तन को प्रेम सुरति अम श्री यमु
नाजी कुंडल आदि क अनेक अंग आभरन पसु पंखी
यह भाव अध्यात्मक में वृंदावन॥ गिरि राज श्री य
मुनाजी व्रज के वृंदावन कुंड आगे लीला करी हे सो ती
र्थरूप॥ भौतिक में लौकिक जानि अपराध करें॥ द्वा
दसबाग रूप बारह वन हें॥ तहां नित्य रास हे॥ प्रभू खिवा
वें सो रितु रात्र आसध होर जाउ॥ कार्तिक वदी १॥
तें दीपदान नित्य करनो॥ नवनें ता रीवा॥ ध॥ करि योक
जोत अधराव छोडे मंदिर आगे॥ तथा तुलसी आगे
बारें भक्त के हृदय दीपक रूप॥ कार्तिक वदि ११॥ को स्यां
मजरी को बागम॥ गोपी वल्लभ में तथा साज भोग में न
ई सामिग्री॥ एकादसी श्री चंद्रावलीजी को मनोरथ हें॥
अंधियारो पक्ष हे॥ ता तें अभिसार का हे॥ उजि
यारे केली ये कुंज में अकास दीवा हें॥ यह भाव जताए
प्रभू को संकेत स्यां म श्री यमुनाजी रूप॥ द्वादसी को
पीरी जरी सो श्री स्वामिनीजी रूप॥ द्वादसो अंग प्रभू

रास· केविनयोगकीये॥ राजभोगमेंकछूसामिग्री॥ धनतेर
३२ सकेदिनहरीजरीकोबागा॥ हराचीराहरेरंगमेंहोयहेस्या
म॥ पीतभक्त॥ दोऊमिलिकेंहरतभये॥ दोऊस्वरूपएक
भये॥ तबएकतिरूपाकहे॥ धंन्यतेरसजादिनांजा
कोंप्रभूमिलेगोपीवल्लभमेंतथाराजभोगमेंसब॥
पीरीफेनीभावउद्बोधक॥ मुख्यसीराधरनों॥ श्रीसा
मिनीजीकोंअधरामृततथाउदररूपकोंमल॥ लौकि
कमेंधनांसतजीव॥ धंनकोंदूधसोंधोवतहें॥ अपलो
भागमानतहें॥ तसेंहीब्रजभक्तनकेजीवनप्रानश्रीठा
कुरजीहें॥ तिनकोंस्नानश्रृंगारकरायसामिग्री
भापअपनोंजन्मसुफलमानतहें॥ जहांहैसोकोटि
गकोटिकंदर्पलावन्यताकोंस्वरूपवर्णतहें॥ संपवोह
स॥ मंगलाभोगनित्यकीनाई॥ मंगलाआरतीपीछे
॥ थारमेंपीढाधारिप्रभूकोंपधिराइये॥ तारकोपडो
ह॥ यीकेसीवासारोंआरवारिये॥ तिलककरिअस्थ
तलगायबीडाद्येऊआरधरिआंगामांटीवारियेतीन

बार॥ बालककोंरोगदोखनजरसबजाय॥ रोवेंनहींहंढ
नकरेंता अर्थ॥ तुलसीचरनारविंदपरसमर्पे॥ दीवाहे
पचूंनकेतेलभरिबातीचारिये॥ हाथधोइडारिये॥ का
हूमंदिरमेंचूनकेदीवानांहीमुखियाध॥ चारआरती
करिहाथधोइअभ्यंगकरावतहें॥ तसोदकसोंन्ह
वायकेसरिलगावतहेंफुलेलबाउवरनोआव
लासलगावतहें॥ नवकहेस्यामकहंगौरदर्सनहो
तहें॥ धनतेरसकोंएकवतीहरेभए॥ सोयासमयदो
ऊगौरन्यारेन्यारेदर्सनहोतहें॥ फुलेलसोंहरूप
लगाइये॥ उबटनोबिरूसावियोगरूपहें॥ तातेंसंयो
गवियोगदोऊरसकोंअनुभवभक्तकरतहें॥ एकही
कालमेंदोऊरसतिलकजयपताकाकामकोंजीते
अद्भुतपीरप्रीतिकोउद्बोधकबीडादोयठिहलजु
गलस्वरूपकेभावतें॥ मुखियाचारबारें॥ तामेंअर्थ
धर्मकामंमोक्ष॥ तथाचारमुक्तिसारूप्यसालोक्य
सामिप्यसायुज्य॥ यहसुखआगेंसबतुच्छहें॥ वा

का.प. एकें जारदीनें आरती चौरजोतिकी उतारिये ॥ चारो
भक्तनको विरहताप वारे ॥ सर्वांगदर्शन भयो अनुभ
३३ वकी एक हवे रखारें ॥ सो षट्गुन ऐश्वर्यको ढांकिके व
लधर्मी की लीलारसमें मगन भई आरती वेगकी ए ॥
सो निरावरनको अवलोकन सी ध्रही है ॥ तथा वात्स
ल्यतें सीतको स्वरूप है ॥ तप्तजलसों स्नान रात्रिको श्रम
निवारणार्थ ॥ तथा तमोगुनी भक्तके भावसों केसर जो ॥
गुंनीके भक्त तिनके भावतें ॥ तप्तमें सीतल जलस ले
हैं ॥ पाछें अंगवस्त्रकी टपी छें निर्गुन भक्त में [illegible]
भए ॥ तातें कोमल अंगवस्त्रतें जलांस ने कहे [illegible] ये ॥
स्यांमस्वरूप में तेल को रिसमर्पन करनो ॥ [illegible]
रदस्यांमद्दालिः तांजन चिक्कनः ॥ रस [illegible] के भक्तन [illegible]
गौरस्वरूप भक्तकों अमर प्रगट है ॥ तातें [illegible] तेल [illegible]
हा प्रयोजन है ॥ सालतासकों वागा लाल चीरा अनु
रागपुतकहें ॥ हीराके आभूखन भक्तिरूपाके मनोर्थ
तें ॥ काहू मंदिर में प्रथम तेल लगावत हैं ॥ अरगजा

मेंहरदी कुंमकुंम पीसस्सषी तुलसी डारत हैं ॥ आंवलामें
पाछें केसारसों न्हवाइ ॥ वागा सुनहरी जरी चीरा श्रीपा
दुकाजी हैं पतो उनहूं को ॥ अभ्यंग अंगवस्त्र पीछें फेर
फुलेल समर्पे ॥ राजभोग में धोळी सार ॥ षीरवडा ॥ सेव
[illegible] गसाक ॥ पूवा ॥ दीवडा ॥ संजाव की षीरपा
छें [illegible] रीत ॥ दिवारी में सब को भाव ॥ पूरत हैं ॥ अन्य
[illegible] आरती में ॥ मोती की आरती मंडलाकार ॥ मं
दिर में [illegible] पाकोरी हरदी को तामें गुलाल चोरीग
[illegible] कुमासिंदूर जंगाल लगावत हैं ॥ मंडिलाकार
एके गहरा चेल बनावत हैं ॥ के गहरा भक्तन की काहनी
मंडलाकार में हाथ जोरे हैं ॥ अभ्यंग में आंवला अ
रगजा में हरदी कुंमकुंम तेल पीछें केसर लगावत त
जलसों स्नान करत हैं ॥ अंगवस्त्र करिके तजरीको वा
गा कहूं हे कुलह स्वेत कहूं हीराकी ॥ कहूं कुलह लाल स
थन लाल ॥ गोपीवल्लभ में दीवडा हसत कृपालरूप
॥ कुंमारिकाके कुचस्वरूप हूं हें ॥ आरापात्वरी अधरपे

दिवा. खेडनकोभाव॥ राजभोगमेंम्रगकीछडियलदारमुख्य
३५ केभावसों॥ तीनकूंडामेंमृगकीवडीचनो॥ इमलीमेंकेलो
नबारीकेभावसों॥ च्याछिकेवडा॥ सेजावकीषीर॥ दीव
जसेव॥ मीगसाकऔरनित्यकीरीत॥ मोतीकीआरती
संध्यासमयदीपदानकरतहें॥ नईधुजा॥ १॥ श्रीजीके
धरतहेंधुजाकेपांहीबामनिकोगऊपरसेयामंदिरऊ
परजगमोहनकेऊपर॥ सिंघपोरऊपर वूढेबाबाकोमंदि
रऊपर॥ वेदेषोवरतरुरोषनदीपक॥ श्रीस्वामिनीजीके
भावतेंदीवामेंसुगंधमुषकमलकोपरागदीवाकीसीत
पीरीलालहे॥ सोभक्तनकीप्रीतिप्रगटभईहे॥ दीवाकीजो
तिऊंचीहे॥ सोउछिलतभावजपोहे॥ [illegible]
ऊंचेंचढतहेंसोवेसेहें॥ जोवनरूपजोतवढीहे॥ सिष[illegible]
कोदीवा॥ ४॥ तामेंबातीचारचारचारोंजूथपतिकेभावतें॥
चोकमेंदीपमालिकाकुमारिकाकेभावसोहरदीकोचोक
करतहें॥ [illegible]तापरधरतहें॥ ऊपरवडोदीपतापरबातीचा
रनीचेंषंडमेंदीवाडोपदोयबातीएकएक॥ द्वारपरमाण्या

मेंदीपमालिकाअकृतिरूपाके॥ ४॥ अर्थ॥ कांन्हजगायवे
जातहें॥ तहांदूधपीवतहें॥ वछरापकरिकेंगायकोशेरा
वतहें॥ गुरकीभेलीगेरलाडूगायकोषवायकांनमेंकहत
हें॥ कान्हपेलनकोसावधानरहियो॥ तवासिरनायकें
[illegible]भई॥ [illegible]केमिसिअंतरंगभक्तनकोरमनकेली
[illegible]सावधानकरतहें॥ वागासेततरीसेतश्रीचंद्रावलीजी
तरफोनेके श्रीस्वामिनीजीपाछेघरआयपनोंअरोग
तहें॥ पाछेहटरीसिंगारतहें॥ हटरीकोआभूषनपहिरा
वतहें॥ हारपाहिरावतहें॥ चारोंषंभकोवंदनवारबांधत
हें॥ कंकनजडाऊकलसाधरतहें॥ छुद्रघंटिकाबांध
तहें॥ महावरतथारंगारंगसोंचित्रविचित्रकरतहें॥ वस
नसगरेआभूषनधरतहें॥ प्रभुकेस्वामिनीकेमिवा
री॥ मेवा॥ तरमेवा॥ दीवडा॥ केसरिकस्तूरी॥ बरासजाय
फलजावित्री॥ लोंगइलायची॥ दालचीनी॥ सुपारीके
फूलकतरके॥ पिस्तादाष॥ किसमिस॥ छुहारा॥ मषा
नो॥ नारियरकीगरी॥ आबरोरबीजातोवूल॥ चोबाअत

र॥ कमलगट्टा॥ सांकरलाकड़ी॥ रोटी॥ पट्टी॥ षांडके षिं
लोना॥ मालानीचें कोरीहरदीको चोक॥ तापर गुलाल
होरंग॥ कुंमकुम आदिभरि॥ तापर हटरी धरत हें॥ च
नांधांनी सेकी॥ अबीरगुलाल॥ चोवा सिंदूर॥ काजर॥
दीबजा गेंदा लाडू॥ मेवाती॥ बूंदीसकरपारा आदि सग
रीसांमिग्री धरिये याके पास॥ सिषरनवडी॥ वडाछ्वा
छके॥ महारानीजी इनी भत तहां चोपडि बिछायरो
अओरगाहीत किपा॥ तहां चारों ओर दीपमालिका॥ सं
गरां मिलिकें भेट धरें॥ सो भेट बोटिकें चोपडके आसपा
स धरिए जू आषेलनके अर्थ॥ मोतीकी आरतीकरि
चित्रविचित्ररंगसों नरी॥ आंधियारी रात हें॥ तब
पजी आदि गिरराजकी परिक्रमां करावतहें॥ ताकरि
येंदीवा धरतहें॥ तथा पीछेंते श्रीगोकुलजी पधारतहें॥
सो स्वेतजरीको उजियारो भक्तनके न कुंजमें परतहें॥
तब भक्तन आपनें अपनें कुंजमें पधराय सगरीरात
रमन करतहें॥ तातें कुंहूकी अंधेरी रात हें जो ए

हरसको तोनका हे कोन होइ॥ पाछें सिंगार भारी बडो होइ
होऊ गेरके बडे जडाऊ हार पहिरके चंद्रका हेसि ज्यामें वागा
सहित पोंढें॥ कहूं बागा बडो ओ होइ पीछें ओर नये फे
रि वही श्रृंगार होइ॥ चोपडमें गोटी सोरह॥ षोडषप्रमका
स्वरूप कहें सात्विकादि भेदतें ९॥ सतचितआनंद॥ १२॥ च
तुर्थेनतसूपपति॥ १६॥ भए॥ तमोगुनी स्यांमरंग वस्त्र
पहिरेहें॥ रजोगुनी लाल पहिरेहें॥ सतोगुनी हरो तथा स्वे
तरंगके वस्त्र पहिरेहें॥ निर्गुन पीरेरंगके वस्त्र पहिरेहें॥
पासा तीन धीरा॥ आधीराधीराधीरा॥ तथा तीनप्रका
की सुधाकी क्रीडा॥ देवभोग्या भगवद्भोग्या॥ सर्वभोग्या।
एकएक पासामें चोदह चोदह आंक हें॥ चोदह विद्यामें नि
पुन वंधादिक मेंती नो भक्तमुख्य॥ स्वामिनी अत्रितिसूपा
कुमारिका महारानीजी सबमें हें॥ षेड॥ ९॥ ई॥ तामें बंध
चोरासी आधाररूप ओर द्वादस सत्के हें॥ लीलामें॥ श्रि
पापुष्प्रागिराकी ल्योकी न्यो तुछमें लयोजे या॥ विद्या पा।
मापपाचो निवेदितो॥ येद्वादसामिल्यो
निघपा॥ द्वा॥ तसा।

दिवा· ॥९६॥ भए उद्दीपन ॥१॥ आलंबन भाव व्यभिचारी भाव अ
३६ नुभाव ये चार लंबे को गये चार जूथ ॥ राग कान्हरो ॥ अद्भु
त एक अनूप [illegible]प मनारे नेनन बेनें चोबीस चोगुने सो
रह चरन बदन है चार ॥१॥ चतुरानन सों प्रीत तीन पति
ईस तांके एक [illegible] इनुं नेने स्याम स्वेत आरक्त हारत पद्म चल
तन बेवा लत तहा वेने ॥२॥ सालिक रा[illegible]जस तामस ति
गुन एक जुगम दरसन को आवत ॥ मगन भए सायुज्य मु
क्ति फल त्रिविध रूप रेषे सुष पावत ॥३॥ ये हि विधि षेल
रच्यो व्रज मंडल दीप दिवारी प्रगट दिपाई ॥ नू[illegible]
के जूथ विराजत छवि पर डारके सि वालि जा[illegible] ॥४॥ ह
री भरत हैं ॥ तहा सो होऊ नाडी न्यारे न्यारे [illegible]वहे ॥ [illegible]
व्रज भक्त सो हालेन आवत हे ॥ अन ने [illegible]स्य[illegible]राक्ष
कर भाव उद्दीपन करि पाछे विहार करत हें ॥ में [illegible]सा
चोपडे की
होस सो श्री ठाकुरजी अत्यंत उलके मंगल आरती सो अ[illegible]नो स
वो गम भूपर वारें ॥ अंनकूट ॥ अंनकूट मंगला आरती
को रात्रि के वागा को दरसन न होइ ऐसे ओढि के गद्दर वि
कार्तिक सुदी १

राजें ॥ एक श्री मुषही को दरसन होय ॥ रात्रि की विहार ली
ला छिपायवे के लीये ॥ मंगला आरती में गुरजन हू दरस
न को आवें ॥ ताते श्री ठाकुरजी सर्वांग वागा छिपाय सीत
काल मिस गद्दर ओढिके वैठत हें ॥ गद्दर ने इरापजी को है ॥ व
हुत [illegible]जी [illegible]पहरत हें ॥ सो सीतकाल में प्रभु ने इरा
पजी [illegible]प हू पोढिके वैठत हें ॥ तथा नेइरापजी सो तो प्रभु
[illegible]पहिलें उठिके व्रज के कामकाज अर्प[illegible]दे
ह[illegible]न अण्याई में जात हें ॥ इहां प्रभु उठिकें निज
भक्तन को गद्दर के भीतर छिपाइकें ओढके सबको दरस
न देत हें ॥ जहां मंगला आरती भई ॥ गुरजन अपने अ
पने कार्य अर्थ गए ॥ तथा जसोदाजी अंनकूट के कार्य
अर्थ गई ॥ तब ताकि गद्दर वडो करकें रात्रि के वागा प
र श्रृंगार करत हें ॥ यह मुख्य प[illegible] ॥ कहूं ऐसें हू हें ॥
वागा वडे करकें स्नान करिकें फेर वागा धरि श्रृंगार कर
त हें ॥ दिवारी को श्रृंगार स्वेत जरी को ॥ वागो स्वेत जरी की
कुलह श्री चंद्रावली जी गादी के भीतर लाल हें ॥ सो मुख्य

अन.
३७

श्रीस्वामिनीजी ॥ लालनतुरंअनुरागप्रगटभयो ॥ श्रीहस्त
मेंपीतांबरलालदरियाईको ॥ गोकर्णाकारतोरातीकोभा
वयहहे ॥ गायकीजहांचित्तकीलगनहोतहेतहांकर्णपुट
मांडिरहतहें ॥ तेसेहीप्रभुके चित्तकीलग्नव्रज भक्तनमेंहें ॥
सोगोकर्णधारिभक्तनकेभावमेंमग्नहोइरहेहें ॥ गोकर्ण
नारंगीरंगभक्तनकोअनुराग ॥ किनारीसोंसबनकीप्री
तिझलकलातहें ॥ याप्रकारश्रृंगारकरिगोपीवल्लभमेंसे
वल्लैसारी ॥ औरानित्यक्रीरीत ॥ राजभोगमेंसेव ॥ तीनबू
आ ॥ मीगेसाक ॥ खाटेकेवडा ॥ पापड ॥ संजावकीषीर ॥
लपसी ॥ पूवा ॥ चकुली ॥ सिखरनवडी ॥ पाछेनित्यक्रीरी
त ॥ पाछेमोतीकीआरती ॥ पाछेफेरश्रीहस्तमेंपीतांब
रधरें ॥ गायखिलायवेकोभाव ॥ राजभोगधरतेंगोवर्धन
धरिये ॥ गोवर्धनगोबरको ॥ हरदीकोचोकपूरिव्रजरूप ॥
तापरगोवर्धनलेवेगिरराजकीनाईं ॥ आरदृष्टिगोवर्धनमें
ऊंचोरंचहोइ ॥ गोबरकेनीचेंपाउंकोजे ॥ गोवर्धनासिलावि
राजवेकेलीपें ॥ ऊपरकेरातपालनतारापियेंसीकमेंरूपी

लगाइगाडिये ॥ पूजाकोसाजसबपासधरिये ॥ कुंमकुम
कीथापारीजे ॥ चालनीसोंचोकगोवर्धनकेचारोंओरपू
रिये ॥ गुलालहरदीचोरीगमलराकेंहरदीसोंरंगिये ॥ उ
परनाकेआरपीरें ॥ अष्टतपीरेंरंगिये ॥ मलराकेऊपरकुं
मकुंमकेथापाकरिये ॥ दूध मोंनसींगगाकोजल ॥ रही
औरगजा ॥ मलरा ॥ १०० ॥ बीरा ॥ १०० ॥ इतनोंनवृंतो ॥ ३२ ॥ ने
तथा ॥ ६ ॥ तथा ॥ ८ ॥ तथा ॥ ४ ॥ सोंघरतीनाहीं ॥ मलरामें
सीरानीकेऊपरमवरी ॥ २ ॥ तापरलाडू ॥ ४ ॥ तेरेंचऊपर
होइजातेरलडूआसेवके ॥ तिनकोदर्सनहोइ ॥ सीराअ
धामृत ॥ मामकपोलाकृत ॥ लाडुपीकुलरूपरात्रकोरम
नभयो ॥ तातेंभक्तमनोरथकरि ॥ कुंडवारोकरतहें ॥ अनु
पानरूप ॥ सेवकीहेंकुंडवारेमेंहे ॥ सरवडीमेंदहीभातकों
बनेंतोकरें ॥ तथाअनसरवडीमेंखीरऊपरलोनरखिये
रें ॥ श्रीमहारानीजीइवीभूत ॥ चोवरकुंमारिका ॥ पूराभु
तिरूपामेंवासुगंधश्रीस्वामिनीजी ॥ राजभोगपाछेंला
लपीरीदरियाईके टोरा मांथेंबांधतहें ॥ सोजवजसो

अन्नं. राजीकेपुत्रभयो ॥ तबदसहिनलोब्रजवासीनकेरीतहे ॥
३८ मांथेसोपट्टीबांधतहे ॥ तबजसोदाजीरेवीआदिसगरेदे
वपूजाकीमानताकरीहे ॥ पट्टीबांधिपूजनकरोगी ॥ पुत्र
नीकेराखियो ॥ पाछेनंदकूपमहावनमेंहें ॥ ताहूकेपूज
नमेंपट्टीसगरेनंदरायजीआदिगोपबांधेहें ॥ तथाजमु
नापूजनदेवीपूजनमेंबांधतहे ॥ यहगिरराजपूजाश्री
गुसांईजीनेसबसोंबडोदेषताबतायो ॥ तातेंसगरेब्रजबा
सीरोरांबांधतहे ॥ अथबालालअनुरागरूप ॥ पीरोप्रीत
रूप ॥ सोश्रीगोवरधनपूजाकेआनंदमेंअनुरागप्रीति
हृदयतेंउच्छलितहोइकेसर्वांगमेंफैलीमांथेसोंवोहरस
लफलातहे ॥ रथनगांवद्धसोमनुप्रीतिसोंवधतहे ॥
ब्रजभक्तनकेवसहें ॥ पाछेअनूप[illegible]र ॥ तासालनी
केचौकपूरतचलेगोवरधनपासआयपधराजें ॥ पा
छेनोअधरामृतरूपभोगआवे ॥ मिश्रीश्रीस्वामिनी
जीरूप ॥ जलश्रीमहारानीजीकपूरश्रीचंद्रावलीजीमि
सकुंमारिकाकोसीतकारभोगसरायवीडाधरिगोव

वस्त्र
रधनपूजिये ॥ गोवरधनकेबीचोंबीचपाड़मेंलालहरिया
डीकोविछायगोवरधनासिलाकोपधराइये ॥ संकल्प
करनो ॥ सकलसौभाग्यसिध्यर्थंगोवर्धनपूजांचकरि
ष्ये ॥ पलकहिजलअक्षतछोडनो पीछेसंषहाथमें
लेयपमजलसोंपीछेदूधसोंसगरेगोवरधनगोवर्द्ध
नकोंस्नापयपीछेफेरजलसोंगोवर्द्धनदूसरेसदृ
हृदयस्वरूपहे ॥ तातेंश्रीस्वामिनीजीहूंन्हाइदूधसोंगो
वरधनहूंदूधसोंपाछेपीछेंचंदनअगरगजालगायपह
रलीकुंमकुंमकेथापादीजे ॥ गोवरधनकेऊपर ॥ पाछे
ऊपरनोहोऊगोवर्द्धनकोंउढाइये ॥ मालापहिराइये
पाछेझारीभरिवामाहिसधरिधूपदीपकरिये
पाछेकूंडवारोभोगधरितुलसीसेषोदकफकीजे ॥ स
खडीमेंदहीभातषीरहूहोइ ॥ टराकरसमयपलपेंआ
चमनमुखवस्त्रकरिए ॥ बीडाधरिआरतीकरिये ॥
न्योछावरकीजे ॥ पाछेंग्वालतथाहूधधारपाकों
मांषेंऊपरनांबांधिपीग्यापाकूंडवारेहूकीरकहांडी
छातीमें

अंन. हाथमेंदीजे ॥ पाछेंकीरतानियांकोंदीजे ॥ पाछेंगोवरध
३९ नसिलाकोंप्रभूकेपासपधिराय ॥ अपनेंश्रीगकुरजी
कोंपीतांवरउढाय ॥ पीछेंगाइविछाइयेंगोवरधनरूप
रलाइकेंमानसीगंगासुरतिश्रमविहाररूपीरसदूध
श्रीस्वामिनीजीकेभावतें ॥ संषकेंगाछत ॥ हरदीमीतरू
प ॥ कुंमकुमअनुरागरूपअरगजाविरहतापनिवारक
उपरनागोवरधनओढे ॥ सारीरूप ॥ हरिपारीकोपी
तांबरगोवरधनासिलाओरप्रभूदोऊओढे ॥ रसगो
पकरनार्थप्रभूपनोंआरोगें ॥ अधरामृत ॥ पाछें
जतकरिप्रभूकोंपधरायमंदिरमेंलाइये ॥ गोवरध
नपूजिकेंघरआए ॥ द्वारपरआवें ॥ तब[illegible]लनतोसव
तिर्वंचनकराइयेंआवाकेपतासों[illegible]सकुमारका
गलरूपजारिल्यावें ॥ तामेंतेंवारिप्रभूकों[illegible]पीपर
छांटिये ॥ कहेंद्वारपरआरतीजसोराजी[illegible]वसों
होतहें ॥ कहेंनांही ॥ प्रभूकोंसिंघासनपरपधराय
॥ पनांभोगधरिये ॥ पाछेंअंनकूटपूरवकीतैयारी

करिये ॥ मंदिरकेंचोकमेंतथावाहिरतिवारीमेंकोरीहर
दीकोसाथपाकरिये ॥ तापरवीडाधासकोधरिये ॥ ता
परपातरविछाइये ॥ चोहनीविछाइये ॥ नवनेताआव
स्यनहीहें ॥ प्रथमसेवओरघृतसेंकडारियेपीछेंभात
तापरहे[illegible]करिये ॥ सागीआवस्यककरिये ॥ हजकोचाव
रसारोहेंकुमारिकाकेंभावतेंथारासोंडारियेओरअन्न
केचावलकरिये ॥ सगरेभातकोगोवरधनकीनांईपा
नीकोहपरद्दावकेऊपरवीचोवीचचक्रधरिये ॥ चि
त्रअन्नकीओररहें ॥ पाछेंगेहूंकाचारचारेकोंनेंषोंसि ॥
ए ॥ चिन्हप्रभूकीओररहें ॥ चक्रमुखरूप ॥ चित्रनासि
कानेत्रवेसररूप ॥ चारों[illegible]गेहूंकामु[illegible]जारूपभातश्री
चंद्रावलीजीतिनकोरायतुजा ॥ दोपश्रीस्वामिनीजी ॥
की ॥ अथवाचारोंश्रीस्वामिनीजीरूपस्वामिनीजीके
पीछें ॥ श्रीयमुनाजीवामभागि ॥ श्रीचंद्रावलीजीकेपी
छें ॥ कुमारिका[illegible]दाछिनभागिकेंसारिचेंहनछिराकि
पाछेंचारोंकोतुलसीकीमालापहिरायश्रीस्वामिनीजी

कृष्णअंगकोगंधरूप॥चारकोनेचारद्वार॥चनोश्रीस्वामि
भाव· नीजी॥उरदश्रुतिरूपा॥अत्रेरहश्रीमहारांनीजी॥मंग
५० कुमारिका॥गढमंगवडेगोपनकेमनोरथहे॥वडामग
केसववूराकी॥मगकेवरानिजभक्तनकोभाव॥कांजीव
अहंकाररूपकेभाववडीउरदकीमूगकीभक्तनकेहृदय
रूप॥मिरचवडीमुख्यकोसीतकारतिलवडीश्रुतिरू
पाअधरषंडन॥पापरश्रुतिरूपाकेहृदयरूप॥कचरि
पानोगुनकेभक्ततिनकेकुचरूपदहीभातश्रुतिरूपा
केभावतोसिखरनडीश्रीयमुनाजीसेवक्नोसा[illegible]मु
ख्यस्वामिनीकेअधररूप॥मंगपकोरी[illegible]तपा
धीकीतरीभीनीदहीमेतपाकद्धमेजमुनाजी॥का
रीकुंमारिका॥सेवकापीरस्वामिनीजी॥मा[illegible]काकी
षीरश्रुतिरूपा॥चांवरकीकुंमारिका॥संजावकी[illegible]य
मुनाजी॥तवापूरीनित्यासिधाचारोंके॥दालछडीय
लउरदकीजमुनाजी॥मूंगकीकुंमारिका॥कढीपीरीमु
ख्यकेभाव॥तीनकूंडामेंचारो चनोमुख्य॥चोरीगकुंमा

रिकामिरचरश्रुतिरूपा॥जलश्रीयमुनाजीरतालूचक्रता
श्रुतिरूपा॥कमीरश्रीकीआवलीडारिकुंमारिका॥षीरसा
गीकुमारिका॥धीकेकूंडे॥४॥चारेजूथपतिकोस्नेह
रूप॥[illegible]हिनीदिसवजा॥वामदिसाषीर॥साकादीनाम
दिसिकेद[illegible]दछिनदिसफलमेवातरमेवा।वामदि
सा[illegible]मुजीछोंकोवेसननसोलपेटी॥चकतानीवूंत्रा
[illegible]चर[illegible]सीतकार॥पनोमिश्रीकोश्रीस्वामिनीजीको
[illegible]मटतविरीपेनीश्रीस्वामिनीजीकेमुखरूप
[illegible]केनीश्रुतिरूपाकेमुखरूप॥वावरपीरेमुख्यस्वा
मिनीजीकेहृदयरूप॥स्वेतवावरश्रुतिरूपाकेहृदय
रूप सेवकेलडुवाश्रुतिरूपाकेकुच॥छुटीवूंदीकुंमा
रिकाकेकुच॥गूंजासारेश्रुतिरूपाकेकंठ॥चासनी
पोजमुनाजीकेकंठमेवाभरमुख्यस्वामिनीजीकेकंठ
गुंजकेभरेकुंमारिकाकेकंठमाला॥एवासषीनकोहृ
दयरूप॥स्वेतसुहारीश्रीचंद्रावलीजीकोहृदयरूप
[illegible]इधश्रीस्वामिनीजीकोअधरामृत॥पंचाँर

अं.न. मेंड़ा मुखके उदर रूप ॥ चकुली आकृति रूपा के कपोल रूप ॥
५१ तिल हे सो गुदगुदो अधर ॥ इंदरसा खसखस के दाना
लगे इंद्र कारन के भाव सकरपारा पागे मुखके नेत्ररू
प ॥ कपूरनाजी मुखके हृदय रूप लोंग ॥ ध ॥ चोली की
तनी रूप षरषरी पूरी हरदी मिली मुखके हृदय रूप
मलारी मुख को अधरामृत ॥ मांषन मिश्री प्रभु के
आति निकट धरिये मुखके अधरामृत मिश्री अध
र षंडन वेसन की भरि वा पूरी ऊपर श्री चंद्रावली की
को हृदय भीतर रस श्री स्वामिनी जी तथा ऊपर श्री य
मुनाजी भीतर मुख ॥ बूरा को कटोरा श्री भगवान को
उदर रूप संधाना तो मसी नो गुन के लाल रहा आतिर
पासि षरन श्री यमुनाजी ॥ मिगद्दी कपोल रूप ॥ जा
श्री यमुनाजी ॥ सीरा मुख श्री स्वामिनी जी को अध
रामृत तथा उदर रूप कोमल ॥ बेसन आकृति रूपा ॥ कसू
री श्री यमुनाजी ॥ मगद को लाडू चांरो को मिलो ॥ चोरी
गको मगद निल्या सिंधाको भाव ॥ मोहन लाडू मगजी

टिके करेंस खीजन को भाव ॥ माखन बड़ा मुखके
कपोल ॥ सेव के लाडू आकृति रूपा ॥ बूंदी के लाडू मुख
के भाव ॥ खोवा के लाडू मोरिका ॥ मनोहर लाडू श्री
यमुनाजी रूपा दिव्य नस पड़ी निकट सखड़ी दूर सो
याते ॥ सो घरधन व्रजन में गुरजन सब पास हें ताते
प्राणनाथ के भक्त आगे हें ॥ कोमल भाव के सखी ललजू
भक्त के पीछे हू रहे ॥ एक डोरा में मिरचा पिसी एक
मांली के कटोरा में लोन पिसो ॥ दीवड़ा जले वी आकृति रू
पा के अधर ॥ सेव बेसन की ॥ मेवाती ॥ मांखन ॥ वरापी
खरा अंनकूट में प्रमान नाही ॥ जितनो मिले जित
नो बनि आवे तितनो करिये ॥ एक जल को रामकटो
रा सखड़ी में ॥ एक ॥ जल को रामकटोरा अनसखड़ी
में श्री यमुना जल के भावतें ॥ कृष्ण के हाथ धोइबे के
षीर सिषरन आदि में जारे यह भाव ॥ एक चपटि पा
सीतल जल छांनि के स्वेत कपरा सों ढांकिके रूपे के
कटोरी तथा तांबे की पीतर की तथा मांटी की आरोगि

वकोदर्शनादिस॥ श्रीचंद्रावलीजीके भावतें॥ जलय
मुनांजीतांमेंगुलावजल श्रीस्वामिनीजीकेयेरी कुं॰
मारिका॥ चपटियापात्ररूपप्रकृतिरूपा॥ झारीवांमअं
गतुलसीदलधूपदीपकरिकें धरिये॥ पीछेंसंषोदि
ककरिये॥ तुलसीश्रीस्वामिनीजीके श्रीअंगकोअं
धरूप॥ धूपकुं मारिकाकोसौरभ॥ दीपप्रकृतिरूपाआ
दि॥ गोपजापीकोंवह्नादिनतें मनोरथ मनमेंहतोजो
प्रभुकोंनांनांप्रकारकीसांमग्रीअपनेहाथसों
कसेंअरोगाइये॥ तवप्रभुभक्तनके मनोरथपूर॥
नकरनार्थे॥ गोवरधनपूजाकेमिसगोपजनहा
सवकेभावकीसांमग्रीअंगीकारकीनी॥ तातेंदीप
करिप्रकृतिरूपाविरहवारतहें॥ संषोदिकश्रीयमुनां
जीजलकोंआदिदैविकसरवहे॥ रेषामुखकोंमाग
कतहें॥ पाछेंविनतीकरिये॥ श्रीआचार्यजीश्रीगुसां
ईजी॥ आपनेगुरुकीकांनकाहिदेंजोतकरिवोहरआ॰
इये॥ देरालगाय॥ कांनकहेतोंविगरीहूंसांमिग्रीअध

रामृतरूपहोतहें॥ भीलकोंचाचाजीसेवककरिआये
सोजूठनकरते॥ परंतुकोंनकही॥ तातेंप्रभुकों
जूठनअरोगायनोपस्यो॥ तातेंजहांकांनकहिये॥ तहां
निश्चयप्रभुआरोगें॥ यहभाव हृदयमेंदृढराषनों॥ दो
पधरीमेंआचमनकराइये॥ काहेतेंदोपधरीकोंएक
महतीहें॥ दोपधरीपीछेंदूसरोमहूरतहोय॥ तातेंध
रीककेंकारदोयघरीकेभीतरराजभोगसराइये॥ सो
रूपुष्टिमार्गमेंभजनमनांहीहें॥ जितनीसांमिग्रीतितनो
समय॥ जावैष्णवकोंजैसोभावनजानअर्पवेगहूसरा
वै॥ हास्यविनोदकरतअरोगतहें॥ यहभावतेंअवेरे
सरावे॥ भावविनासवहूथारारवकोहोंमनोपाछेंआ
चमनमुखवस्त्रकराइवीजाजितनेंवनिआवेतितने
अरोगाइये॥ पीछेंदोपघरीसांमिग्रीसहितदर्सन
होइअंनकूटकीरसोईन्यारीगेरहोइ॥ न्यारमांटीके
पानउफ्रेमाऊलामेंभोगधरिये॥ धातपात्रमेंनांहीध
रिये॥ पाछेंकांमनआवेंजगपसूपले॥ झारीकटोरीज

श्रीन ५३ जलपानकी चिंता नांही॥ सामग्री ग्रीमें न धरिये॥ सा
तदिन गिरराज धरनकोंपह भाव ब्रजभक्तनको नि
र्भेकीए॥ इंद्रसाततासमुइंकोजल वरसेंगोतो चिंता ना १८५
ही॥ तथा श्रीसुवोधनीजी में लिषेहे॥ प्रभुकोसात
मोवरसलग्यो॥ तवछट्ठेवरसतांई षटगुणकी ली
लाकीए॥ अवसातमेंधर्मकी लीलामें इंद्रकोकहा
प्रयोजन अन्याश्रपसंगरे भक्तनकोमिटायगोवर्द्ध
नरूप॥ अन्यापतिनकोपूजन अन्याश्रपकराय॥ याप्रकी
रहरसनहोपधरीहोइ॥ पीछे मोतीकी आरतीर
गभरीहोइ॥ पीछेन्योछावरकरिये॥ पीछे भोग स
रायसवजगेंधोइउत्थापनकोसमयहोइ तो [illegible]नो
सरनहोइवेगहोइतो अनोसरकराइये॥ पीछे दि
नकीरीत॥ भाईदूजकोंश्रीयमुनाजीके [illegible]॥ श्रीयज
मराजनेंकहीजोतुम्हारोनामलेइओजलपानकरे
गासोमेरेलोकमेंनआवेगो श्रीयमुनाजीकोस्वरू
पश्चागन्तके वलप्रभुकी लीलाजलथलरमणक

कार्तिकसुदी २

नार्थहे॥ श्रीगोकुलजी और ब्रजभक्तनकोंरमनामिलन
सिधकरनार्थहें॥ तातेंब्रजभक्त श्रीयमुनाजीकोंप्र
सेन्नकरनार्थे श्रीयमुनाजीकों अंगीकृत तादिनजानिश्री
गोकुलजीकोंपधरायश्रीयमुनाजीकोनामलेवकवमू
[illegible] सामग्रीअरोगावतहे॥ तिलक आरती
करतहें॥ तहांश्रीयमुनाजी भाईकोन्योतेहें॥ इहांब्रज
भक्तनके भाईपिताप्रत्रमित्रसहृदयत्वसर्वस्वप्रभुहें॥
सोपचाध्याईमेंकहेहे॥ यत्पत्यपत्यसुहृदामनुवृत्तिर
ङा गस्त्रीणांस्वधर्म॥ इतिधर्मविदुत्वयोक्तं [illegible]वमेतदुपदे अस्तु
शी पदेत्वयिसप्रेष्ठोभवांस्तनुभ्रृतां किल बंधुरात्मा॥ १॥
याप्रकारसगरोसंबंधप्रभुसेंहें वागालालपाटको
लालचीरा॥ तथा लालजरीकीकुलहअवतारली
लामें [illegible] कोमल नाव॥ व्याप्यवैकुंठ वि
षे श्रीयमुनाजीसंबंधीभाव जलरूढ़ातेसीतें सं
बंधी पाटको वागा विहारमेंश्रमनिवारनार्थ दही
भात आदि मंगला आरती मोतीकी लालवागा अ

भारी· नुरागरूप॥ फूलहवागामेंकिनारी श्रीयमुनांजीमेंरु
५४ लरुलाय॥ राजभोगमेंपहिलोषिचरीकीथालआवे
अनकूटमेंकचीपकीआरोगे नातेंहलकोभोजनर
हीभात॥ दहीन्यारोश्रीचंद्रावलीजी दहीभातश्रीम
हारांनीजीदूधीभात॥ षिचरीकुमारिकाकोमलभा
वें॥ घीश्रीस्वामिनीजीकोस्नेहपापरकपोलषंडन
संध्यानोसीतकार॥ कचरियाआदिसबछाछकेव
डा॥ मीगेसाक॥ तीनकूडानित्यकोराजभोग॥ कछु
कअनकूटकीसांमग्रीअनसषडी॥ याप्रकारसा
गरीसांमग्रीसिधकरि॥ पाछेंतिलककरिये॥ काल
रघंटाबाजें॥ टोपवारआछनकुंमकुंमलगाय॥ [illegible]
हूबीजाटोपधरिआरतीहोतहे॥ चूंकीआरतीमु
गिया॥ध॥ वारिकेंआरतीमेंमुगियामेंकुंमकुंमल
गावतहे॥ अनुरागउमडनोआरतीकीजोत॥ आरती
हृदयरूपजोतफूली॥ हृदयमेंतेंअनुरागफूल्यो॥ पा
छेंधूपदीपतुलसीसंषोदकभोगआवे॥ कहूंति

लककरिभोगआवे॥ पीछेंराजभोगकीआरतीएकही
होय॥ आवस्यउत्सवकीदूसरीआरतीचहियेधरानें
हकेंएकवेगीहे॥ ताकोनांमसहोद्राहे॥ तिनकेघरपधा
रेहें॥ वहिंननेन्योतोकीयोहे॥ तथाबरसानेमेंएकउ
पनंदकीवखाररहतहे॥ मेंनोनांमहे॥ ताहूकेघरप
धारतहे॥ एकनंदजीकेकुलकीबहनहे॥ सगरेगोपड
सोहोहिनकहिंपूजतहे॥ तिनकोनांमसुभद्राहे॥ ति
नहूंकेघरआवतहें॥ औरब्रजभक्ततोमुख्यहें॥ तहांतें
सर्वभोगपकरतहें॥ पाछेंनित्यकीरीत॥ गोपाष्टमीको
उत्सव॥ गोपाष्टमीकोअभ्यंग॥ मुकटकाछनीको
श्रृंगार॥ कहूंअभ्यंगनाहीं॥ सोयातेंजोगोपाष्टमी
रासपूंन्योंदांनलीलाहेंनित्यहीहोतहें॥ दिनकोनि
यमनांहींजोफलानेंदिनभई॥ तातेंनपेमुकटकाछ
नीकोनेमनांहीं॥ गोपीवस्त्रमेंसांमिग्रीकोनेमनां
हीतेसेंहीअभ्यंगहूनांहीं॥ औतारलीलामेंनेमहें॥
श्रुतिरूपाकुमारिकाकेअर्थप्रगटें॥ तबदांनएकाद

भाद्री सौकेदिनसांनलीलाकरी॥ सोपकारसी वरसकेवरसश्र

५५ तिरूपाउछव मानतहें॥ रासपून्योकोरासलीलाकरी॥ ता

तेंवरसकेवरसरासलीलाश्रीतिरूपाकुं मारिकाउत्सव

मानतहें॥ गोपाष्टमीकोप्रथमगाइचरावनकोप

धारे॥ सोवरसकेवरसजसोदाजीनंदरायजीश्रीतिरू

पाकुंमारिकाउत्सवमानतहेंफेरमनरतहें॥ तातेंश्रम

गतथानएवस्त्रसोमिग्रीहेंहें॥ राजभोगमेंसीरा॥ दही

भातसेवकघूसामिस्री॥ पीतांवरकीगातीवाधें फेंट

भरेंमेवामिगाईतें॥ मोतीकीआरतीहोइ॥ पाछेंलीप

कीरीत॥ ग्वालसाथसंगवनमेंपधारे॥ तातेंप्रथमगो

चारनकेपदगाइये॥ श्रीसुबोधनीजीमेंश्री महाप्र

भुजी [illegible]लिषेहें॥ प्रभुवनमेंपधारिसतविध

पुरुषार्थतथाद्दसरसामलेंचोरह॥१४॥ सकीलीलाकी

रे॥ एवंवृंदावनेंश्रीमान्‌,यहधर्मजोव्रजकेवासीसवन

केमनोरथपूरनकीरे॥ प्रभुकेमिलनमेंसवकीआस

किरेरविकेंभइीयहधर्म॥१॥ क्राचित्रर्मांपतियहअर्थ॥

॥२॥ कष्टकगांनकीरे॥ ताकरूरसकीप्राप्तिसवकोंभइी॥

यहअर्थसिधभयो॥२॥ काचित्कलहंसानां,यहको

महंसकीसीचालिलिपालकवरनहे॥ तातेऊपरदेवांग

नाइहांभक्तनीचेनागकंन्या॥ तीनोंलोकमेंकामकीउ

त्पत्तिभइी॥ तवप्रभुकीसेवामेंसवतत्परभइीयहको

म॥३॥ वयोगंभीरयावाचायहमोक्ष॥४॥ मेघकीनाइी

गंभीरवचनरसकीवृष्टिअधरामृतमेंसवकोमगनक

रिदीपे॥ और व्रजकेभक्तयहरसतेकवहुंननिकसेयहमो

क्ष॥४॥ गोरजक्षुरितकुंतल,अतिसोभाइीपे॥ अलक

सों रतिकोउत्पादक यातेंरतिकोस्थाइीभाव॥१॥ गोरजकी

व्याप्तमुषपरदेखिगिल्यानआइीजोहमारेप्रानपतिके

मुखपरधरेहें॥ सोविभत्स [illegible]रसकोस्थाइीभाव॥२॥

दु वर्हं[illegible]वर्हमोरमुकटअगभूपरनीमित्तहें॥ यहवीररस

कोस्थाइीभावउत्साहतेंभयो॥३॥ मोरकेपरकोमुक

टदेषिविस्मयभयो॥ आश्चर्यजोकेसेवनायें॥ यहआ

श्चर्यकोस्थाइीभाव॥४॥ वन्यप्रसूनवनकेप्रसूनधरे

हे॥ मांथेपरवनमेंवहुतश्रीतहे॥ फेरहूंवनमेंनपधारे॥ प
गोपा हुनपभयोसोभयांनकरसकोस्थाइीभाव॥ ५॥ प्रसू
५६ नहेप्रभूष्टासहंनांहे॥ तकालकुंमिलापजायएसेकोधा
रनकहाहमारांधर्मनकरे॥ यहहास्यभयो॥ सोहास्यरस
कोस्थाइीभाव॥ ६॥ रुचिरहसन॥ सुंदरनेत्रकटाक्षस
हितएसेंप्रभूकेदर्सनकोवनमेंनगपोजायतातेंभयो
सोक॥ यहकरुनारसकोस्थाइीभाव॥ ७॥ चारुहासदे
षकेंभयोक्रोधहमाविरहकरिकेंतप्तहें॥ ज्ञाउहसतहें पह
रौद्ररसकोस्थाइीभाव॥ ८॥ वेनुकोकूंनांघरमेंसुंनि
केंकछूभयत्नवन्यो॥ सोपिलभाव ज्ञाहसानिर्दय
हसांतरसकोस्थाइीभाव॥ ९॥ अनुगेरनुरागकीनि
अनुचरकरिकेंकीर्तिगाइवेकोअधिकारहे॥ अउच
रहोइतोहूनानिलजहोइसवकेआगेकीरतनकीना
वतहें॥ यहकरिकेस्नेहभयोसोभक्तिकोस्थाइीभाव॥
पाप्रकारवनमेंपधारिचारदेहरसकीलीलाकरिल
कनकोंभावप्रगटकीयो॥ वनजानोनोमिकुंजादिककीली

लाकरनीये॥ इहांमोतचरनजांनेंजोवालककोगोचारनको
गयोहे॥ कार्तिकसुदि॥ ९॥ अक्षेनोमी॥ प्रभूकोश्रृ
गारकरिकेंदर्पनदिखायसगरेपरिक्रमाकरें॥ सगरे
व्रजभक्तनकोंभावहे॥ यहजात्रातीर्थपर्यटनकछुनो
तनसोंमिसरीराजभोगमेंहोइ॥ हरिप्रबोधनीअग्नं
[illegible]॥ मर्यादारीतसोंवांवनजीराजा
वलकोछलिकेंपीछेंवरदांनदीए॥ चारमहिनावरषा
रितुमेंसुहारेइहांरहेंगेविष्नुरूपसोंतारीतसोंनंद
रायजीसालिग्रांमविष्नुरूपहें तिनकोउगवतहें॥ पं
चामृतस्नांनकरावतहें॥ रातकेजागरनवेदविधसों
लालपाटकेमुख्यवागातहांश्यामलालजरीकेपीरेपाटके
अलौकिकव्याहहें॥ तातेंलालअनुरागरूप॥ पीरेमु
खकेअंगवणीपाटपूर्वकेकुमारकाकेभावकीकिनी
री॥ श्रीयमुनांजीकेफूलंऊलाटकुलहीलालजरीकीवि
जेहसमीतेंजरीकोवागाप्रबोधनीतेपाटकोवागावीच
मेंजरीकोहोइ भद्राहोइतोसेंनभोगसंगफलाहारभोग

मंदिरमें निज मंदिरमे नही

ग्रा· धारिये ॥ सवेरे उठे तो श्रृंगार पीछे राजभोग संग फलाहा
४७ र धरिए स्वेत षडी को चोक सगरे मंदिर तिवारी चोक मे
पूरिये सिज्या में नांही ॥ मंदिर की तिवारी में साथिया नां
ना प्रकार के रंग को पूरिये सगरे ब्रज को भाव हे ॥ कम
ल आकार षडी गुलाल हरदी हरो रंग वेल रसो दिसा श्री
यमुनाजी की लहर रूप ॥ ता पर षडी को मंडफ ॥ १६ ॥ पीछे
तथा ॥ १७ ॥ सारी षस गरे रस को मूल भूत हे ॥ तामें बीच बीच मे
गोमिहे सो या ते ब्रज भक्तन के कुंज में व्याह षेलत हे ॥ रास
होंवे विहार हे ॥ तहां बीच में आउ हे जो रसाभास न हो ता ते
सेही डीख मे गोमिहे ॥ सो नि कुंजा निकुंज के बीच आडे हे
एक कुंज की लीला एक न देषे सगरे डीष के ऊपर चाहत
हें ॥ सो सगरे निकुंज गिरराज सो श्री प्रभु नाथजी सो
लाग गिरहे हे ॥ ऊपर पता हे सो गिरराज के ऊपर रहे
रहे ॥ पात में लहर हे सो श्रीयमुनाजी हे ॥ नीचे एक ते
एक भक्तन के कुंज हे ॥ ता कुंज के बीच चोकी धरता हे ॥ दो
पहर एक पक तथा चार चार थी के दीवा चारों कोने ध

रत हें ॥ प्रभु रूडी को चागा धरत हे ॥ रूडी भक्त के श्रृंगार
प गुड गुडी ॥ चंद्रका ॥ ५ ॥ तथा ॥ ७ ॥ मुकुट के भाव सों
अलौकिक मोर बांधे हे ॥ गोपी वल्लभ तथा राजभो
ग में सेव ॥ छाछ के बडा ॥ तीन कूंडा ॥ मीठे गेसा ॥ कु
ल्हडन सपडी ॥ तथा षीर ॥ अंगी की होइ प्रकृति रू
पा ॥ रितिका रूपा के होम कुंड हें ॥ ता ते षडी गेरू सों रंगे
हें ॥ षडी प्रकृति रूपा गेरू रिषि रूपा कठेसिं थाउ वो
से नाथजी ॥ बैंगन सकरकंदी ॥ कचरिया ॥ डीष
की गेंडेरी ॥ सिंगाडा प्रकृति रूपा ॥ बोरकुं मांरिका ॥ च
ली नाथजी मुख के भाव ॥ बेंगन श्रीयमुनाजी भाव सं
सकरकंदी गिरराज के भाव ॥ डीष की गंडेरी सगरे नि
कुंज के श्रीस्वामिनीजीन के भाव ॥ कचरिया सखी
जन के भाव ते ॥ पाछे मंडप के बीच चोकी पर गादी स
हित प्रभु को पधराइये ॥ पाछे तीन बार चोकी उगा
य के पह पढिये ॥ उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गोविंद त्यज निद्रां ज
गत्पते ॥ त्वया चोत्थीयमाने न उत्थितं भुवनत्रयं
॥ १ ॥ परात में कुंमकुंम को साथिया कर चोकी पध

प्र॰ रसालिग्रांमतथागोवरधन॥सिल्लाकूंपंचाम्रतस्नो
५८ नकराइये॥पंचाम्रतकोसाजासिधकरिसंकल्पक
रिपे॥भगवतःश्रीपुरुषोतमस्पदेवोत्थापनांपंचाम्र
तस्नांनंकरिष्ये॥पाछेजलअछतछ्वोडिसालिग्रा
मकोतिलकअछतलगाइपंचाम्रतमेतुलसीमहा
मंत्रसोसमर्पिए॥प्रभुकेचरनपरतुलसीसमर्पिए
दूधदहीघ्रतबूरा॥सहत॥पीछेकेसरसोहाथमेंअं
गवस्त्रकरिप्रभुपासवेगरिप्रभुकोसालिग्रांमको
मालापहिरायतिलककरिए॥पाछेनएफरगुल
पगरखजारीरुलाइरीराऊगेरधराइये॥केसरीबा
अबीरगुलालछिरीककेफलाहारभोगधरिए॥बूरी
भोगसकरपारा॥सिघरनवडी॥मिश्रीकापनी॥मे
वा॥तरमेवा॥वेगन॥सकरकंद॥कचरिया॥सेरडी॥
खकीगंडेरी॥चनाकीभाजी॥एकडलियामेपाध
रि॥धूपदीपसंखोदिककरिपाछेभोगधरि॥समप
र्पेभोगधरसराय॥आचमनमुखवस्त्रकरिबी
डा॥२॥धरिये॥मातीकीआरतीरूपकीदीवडाधरिकेकूं

हुंडीकीआरतीरंगभरीमोतीमेंमुगियाचारवारआरती
करि॥परिक्रमा॥४॥करिये॥पाछेदंडोतकरिप्रभुकोसा
लिग्रांमकोनिजमंदिरमेंसिंहानपरपधराइये॥शीष
कासेंरपडवापासिंहानकेचारोंओरधरिपे॥सेनआ
रतीप्रहर॥१॥रातिगएहोइ॥पाछेजागरनकोकीर्तनवा
हषउल्लासकेकुंजकेगाइये॥रात्रिकेतीनोंभोगतीनआ
रतीएकमंडपमेंभोगआवो॥आगेदीपमालिकाकरिए
तामेंएकवडोघ्रतकोदीपधरिए॥अंगीमीद्रापछ्वारी
सीसगरीरातरहे॥जागरनहोतमेंसिज्यासिंहासन
लोंपेडोविछ्योरहे॥जवप्रभुकोराजभोगआवे॥
तबखेलकेगांकुरतथाराजभोगपहिलेंप्रभुकोछोटे
सिंहासनपरपधरायतुलसीपासपधरायतुलसीके
आगेएकसंषजलकोडारिपाछेंसंकल्पकरिएभगव
तःश्रीपुरुषोतमस्पतुलस्याविवाहंकरिष्ये॥जलअछ
तछ्वाडिफलाहारमेवाभोगधरिआचमनमुखवस्त्रक
रिबीजाधरिमातीकीआरतीकरि॥पाछेप्रभुकोतुल

प्रबो॰ सीकीपरिक्रमा ॥ ५ ॥ कारवंजोतकरिप्रभुकोमंदिरमे
५९ पधरायराजभोगादिसेनपर्यंतनित्यकीरीतकरिए ॥ ती
नभोगरात्रिकेचोथोमंगलाभोगतीसरोवजेभोगहो
इवहुतसामिग्रीताहीभोगकेसंगहूमंगलाभोग
कैजाइ ॥ बूंदीपागीसोप्रीत[redacted]हे पागीहे ॥ कुमारि
काकेकुचरूपबूंदीसकरपारापागोमुख्यकेनेत्ररूपस
गरेभोगमेधूपदीपतुलसीसंषोदिक धूपप्रकृति
रूपाकेअंगकोगंध ॥ दीपकुमारिकाकेअंगकीजोत
तुलसीमुख्यकेअंगकोसुगंधसंषोदिकश्रीपरमा
जीघंटासोंकंकनानूपुरादिककोनादभोगसरेहु ॥ म
ऊदूधभातहूरसरूपहे ॥ भातभोगपी[illegible]कीआर
ती ॥ पारीहृदयरूप ॥ मोतीश्रृंगाररूप ॥ दीवराकुचरू
प ॥ आगेदीवाअष्टसखीअष्टविधिऐश्वर्ययासु
खकेआगेवारतहे ॥ मुगियाचारचारोंजूथपतिवारनो
लेतहे ॥ कुंमकुंमअक्षतमालावीराकेसरदसिज्यामंद
रमेंधरतहें ॥ दीवीकुलकीपूजनकेभाववदेवीकेनाम ॥ का

त्यायनी,जोगमाया,संकेतदेवी,वृंदादेवी ॥ चंद्रावलीदेवी,वि
मलादेवी ॥ वनदेवी ॥ संकेतदेवी ॥ उनकेआगेपुजावनमहादे
वगोकुलेस्वर ॥ गोपेश्वर ॥ कामेश्वर ॥ नंदीश्वर ॥ चक्रेस्वर
कुंडेश्वर ॥ बूढेबावा ॥ छद्धरीकोलोग ॥ येलीलासहायक
हें ॥ बूंदीसकरपारा ॥ मागमेषाती ॥ सेनकेलडुवा ॥ भोगए
कपकभोगमेंदसदसधरिये ॥ चारोंजूथपतिकेभावते
भोगमें[redacted]सेर ॥ वडा ॥ तीनकूडा ॥ मीगसाक ॥ डत्स
वकोलिखाहें ॥ तथाबीषकेमंडपबीषअधरामृतरस ॥ गो
पिसोषांडिताके[redacted]नकोतिकवचनभोगहे ॥ सोविहारपी
छेअनुपान ॥ सोरहबीषसोंइंद्री ॥ ५१ ॥ पंचमहाभूत
सोरहभए ॥ तथासोरहकलारूपपूर्णपुरुषोतमकीली
लारूप ॥ तथाआगेंधरतहें ॥ सोअष्टविधिनायका
हें ॥ षंडितावीप्रलब्धावासकसज्जाभिसारिका ॥ १ ॥ क
लहंतारिताबैवतथैवोत्कंठितापरास्वाधीनपतिकाचै
वतथाप्रोषितभर्तृका।संयोगेविप्रलंभेताइत्याद्यो
नायका:स्मृता: ॥ २ ॥ पाछावतेंआगेबीषकोमंडफकार

ऐभक्तचतुर्विधहे॥चारोंजूथपति॥तथातीनसोतीनो
गुनकेएकनिर्गुनतातेंचारकोहूंमंडफकरिये॥चोसठ
कलाहे॥तथाचोसठविद्याआधिदैविकस्वरूपात्मक
तातेंचोसठहूंकरिए॥बतीसषोडषकलायुक्तप्रभुषोडस
कलायुक्तश्रीस्वामिनीजीपाभावसोंबतीसकोहूंमंड
फकरिये॥चारकोनेंआठदीपघृतके॥तथाचारदीप॥त
थासोरहदीपरसउदीपन॥घृतस्नेहरूप॥दीवाकुंवरू
प॥जोतिअंगकीकांति॥चारचारोंजूथपतिकेअष्टअ
ष्टनाइकातथाअष्टसखीकेसोरहकलाश्रीस्वामिनी
जीप्रगट्यहोइरसउदीप्तकरतहे॥पंचामृतसोंस्नान॥पं
चामृतशुधसत्वहेताकरिकेभक्तविषेनिर्दोसता[illegible]
कीस्थितरहे॥फलादिककचेधरनेसोंअवहीभक्तन
कायौवनपरपक्कनांहीभयो॥प्रभुअंगीकारकरेंतो
समयपरपक्कहोइगो॥अवहीअंकुरितहे॥तुलसी
कोविवाहभक्तमालिकेंकीएहे॥पातेंतुलसीअनसंब
धहोननदेंइ॥दिनकेतुलसीकोविवाहकीए॥रात्रकेतुल

सीनेंचारोंजूथकोविवाहकीयो॥चारभोगहेंसोंविवाहपी
छेंभोजदेतहें॥रात्रकेजागरनसोंरासविहार॥अवतार
लीलाविषेंकुमारिकाकोपतिभावहें॥नंदगोपसुतंदे
विपतिमेंकुरुतेनमः॥तातेंतुलसीकेमिसइनहूंकोविवा
हहे॥इनकेविलपतिभावहे॥तातेंइनकोद्वारकालीला
मेंहूंअनुभवहे॥पेंभक्तउभयलीलाविसिष्टहें॥कितनें
भक्तनकोंव्रजलीलामेंहीअंगीकारहे॥श्रुतिरूपाओ
रमुखस्वामिनीरूपभानजानंदादिककोंद्वारकाली
लामेंहीहे॥व्रजलीलामेंनांहीरूपविभन्यारिवासुदेवआ
दिकतनेंभक्तनकोंदोऊलीलामेंअंगीकारहे॥व्रजली
लाद्वारकालीलामें।जेसेंश्रीयमुनाजीउभयली
लाविसिष्ट॥तातेंतूर्यप्रियाकालिंदीजीचतुर्थप्रियाहें॥
तसेंहीकुमारिकाराधासहचरीहें॥तिनहूंकोंउभय
लीलाविसिष्टहे॥पाहीतेगोपीचंदनद्वारिकामेंहे॥रहां
व्रजमेंरासलीलानित्यसिद्धाकोंनित्यहें॥अवतारलीला
मेंश्रुतिरूपाकुमारिकाकेअर्थवरदानदीएहतें॥तातेंस